ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

पौष-माघ संवत् नानकशाही ५५४ जनवरी 2023 वर्ष १६ अंक ५

चाबियों का मोर्चा फतह होने के पश्चात्
बाबा खड़क सिंघ अंग्रेज़ अधिकारी से चाबियां लेते हुए।

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

पौष-माघ, संवत् नानकशाही 554
वर्ष 16 अंक 5 जनवरी 2023

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर साहिब -143006

फोन : 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

... खिदराणे की जंग 7
– डॉ. जगजीवन सिंघ

धनु जननी जिनि जाइआ धंनु पिता परधानु 15
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

पंचम पातशाह के परम मित्र : साँई मियां मीर जी 21
–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब 24
–डॉ. मनजीत कौर

साका तरनतारन साहिब : २६ जनवरी, १९२१ ई. 27
– सिमरजीत सिंघ

... सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड 32
–डॉ. रणजीत कौर पंनवां –बीबी सिमरनजीत कौर

चाबियों के मोर्चे की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 44
–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'

शत्-शत् नमन है मेरा, 'गुरु गोबिंद' महान को ! (कविता) 47
–डॉ. जसप्रीत कौर फ़लक

खबरनामा 48

गुरबाणी विचार

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ बाणी की इस पावन पउड़ी में पुरातन काल से चली आ रही माघ महीने में तीर्थ-स्नान की परंपरा की पृष्ठभूमि में मनुष्य-मात्र को परमात्मा के सच्चे नाम-सिमरन का सहारा लेते हुए वास्तविक आत्मिक विकास के लिए गुरमति महामार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि हे मनुष्य! तेरे लिए वास्तविक लाभ लेने का रास्ता यही है कि माघ के महीने में तू नेक जनों— गुरमुखों की संगत कर! उनसे मिलकर प्रभु-नाम के महत्त्व पर विचार कर! तू गुरमुखों के साथ परमात्मा के नाम की स्तुति रूपी धूलि का स्पर्श कर! यही तेरा स्नान है! तू माघ माह में परमात्मा का नाम स्मरण कर और यह अपने तक ही सीमित न रख। परमात्मा द्वारा मिली इस अनमोल दात (बख्शिश) को आगे भी वितरित कर! यहां समझने योग्य विचार-बिंदु यह है कि गुरमति में अकेले में प्रभु-नाम-चिंतन करने की बजाय संगत में जाकर चिंतन-मनन करने का अधिक महत्त्व माना जाता है।

सतिगुरु पातशाह कथन करते हैं कि हे मानव! यह ऐसा कारगर ढंग है कि इससे मन पर चढ़ी हुई कई जन्मों में किए दुष्कर्मों की मैल उतर जाएगी और तेरे मन से अहंकार चला जाएगा। काम और क्रोध के नुकसानदेय विकारी भाव तुझ पर हावी नहीं रहेंगे। न ही मोह तंग करेगा और लालच रूपी कुत्ता भी तुझे दर-दर नहीं भटकाएगा। सच्चे मार्ग पर चलने से तेरा अपना आत्मिक लाभ तो है ही, संसार भी तेरी शोभा का गुणगान करेगा। अठसठ तीर्थों के स्नान से प्राप्त किए जाने वाले जो पुण्य गणना में आते हैं वे जीवों पर दया-भाव प्रकट करने से स्वत: मिल जाते हैं अर्थात् माघ महीने में हे मनुष्य! तुझे हिंसक व्यवहार को छोड़ना होगा।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिस मनुष्य को नेक-जनों की संगत प्रभु स्वयं प्रदान कर देता है वह मनुष्य वास्तव में बुद्धिमान है। जिनको अपना मूल स्रोत परमात्मा मिल गया, मैं उन पर सदके जाता हूं। माघ महीने में जिन पर पूरा गुरु कृपालु होता है वे भाग्यशाली लोग मात्र बाहरी स्नान से नहीं, बल्कि रूहानी स्नान करने से स्वच्छ होते हैं।

संपादकीय

आओ! अपनी नयी पीढ़ी को धार्मिक विद्या के साथ जोड़ें!

किसी धर्म या कौम का वजूद मूल रूप से उसकी विचारधारा पर निर्भर करता है, जो उसके धर्म के संस्थापक या संस्थापकों द्वारा दिए गए मूल फलसफे में से ही जन्म लेती और विकसित होती है। सिक्ख धर्म श्री गुरु नानक देव जी और उनकी पवित्र ज्योति के धारक सिक्ख गुरु साहिबान द्वारा प्रदत्त सिक्ख फलसफे व गुरमति दर्शन में से उत्पन्न गुरमति विचारधारा एवं जीवन-युक्ति को पढ़, सुन, समझ और जीवन में अपना कर अपने अस्तित्व को इस दुनिया में रूपमान कर सकी है।

गुरमति विचारधारा और जीवन-युक्ति के साथ अभिन्न रूप से जुड़े रहने के कारण सिक्ख धर्म ने एक अतुलनीय इतिहास सृजित किया है। इतिहास रूपी एक गौरवमयी विरासत को सही मायनों में तभी संभाला जा सकता है यदि इससे सम्बन्धित धर्म या कौम की सर्वसाधारण जनता व इसके साथ-साथ उसकी नयी पीढ़ी तक उपलब्धता की जा सके। जो कौमें केवल सृजित हो चुके इतिहास पर ही गर्व करने तक सीमित रह जाएँ और नया इतिहास सृजित करने के पक्ष से उदासीन हो जाएँ, उनका अस्तित्व खतरे में पड़ जाने की आशंका बनी रहती है। अब सवाल पैदा होता है कि इस सम्बन्ध में आज हम कहाँ खड़े हैं? हमारी वास्तविक स्थिति क्या है? गुरमति विचारधारा की सर्वश्रेष्ठता को आज दुनिया मान रही है। इसकी विशुद्धता और श्रेष्ठता को दुनिया के हर कोने में पहचाना जाने लगा है। दूसरी तरफ हम इस विचारधारा के कई अति महत्वपूर्ण पहलुयों से अनभिज्ञता प्रकट कर रहे हैं। हम सिक्ख कहलवाने वाले ही सिक्ख विचारधारा को जानने-समझने से दूर खड़े होने के कारण सिक्खी जीवन-जाच से सम्बन्धित कई प्रकार के भ्रम और आशंकाओं के शिकार हो चुके हैं, जिनके विस्तार में यहाँ नहीं जाया जा सकता। यद्यपि इसमें उतनी मूल गलती न समझने वालों की नहीं है, जितनी इस महान और लासानी विचारधारा से सम्बन्धित समझ रखने वालों की है। इसका मुख्य कारण यह है कि समझते-जानते हुए उन्होंने अपने आप को कई अनावश्यक कारणों से अलग रखा हुआ है।

सिक्खी विचारधारा से नयी पीढ़ी को अवगत करवाना आधुनिक युग की एक बहुत बड़ी ज़रूरत है। आज हमारी नयी पीढ़ी कंप्यूटर, इन्टरनेट आदि अति आधुनिक युग की वैज्ञानिक

युक्तियों व उपकरणों को अपनी औपचारिक विद्या के हिस्से के रूप में लेती हुई दिखाई दे रही है, जो किसी हद तक वक्त की माँग के मुताबिक ज़रूरी भी है। इससे सम्बन्धित एक चिंताजनक पहलू यह भी है कि हमारे बच्चे ऐसे विद्युत माध्यमों द्वारा बाहरी दुनिया के साथ तो विशाल स्तर पर जुड़ गए हैं मगर वे अपने परिवारों से बहुत हद तक दूर हो रहे हैं। बच्चों का केवल कंप्यूटर और इन्टरनेट के साथ ही घंटों-तक जुड़े रहना, कंप्यूटर रूम को एक बंद कोठरी के तौर पर इस्तेमाल करना हमारी चिंता का विषय होना चाहिए। आज हम घर-परिवार में रहते हुए अपने बच्चों के साथ आवश्यक निकटता के संबंधों में नहीं हैं। एक छत के नीचे रहते हुए हम बच्चों से दूर हैं और बच्चे हमसे दूर हैं। यह दूरी असहनीय है, परन्तु हम जैसे-कैसे इसे अनदेखा कर वक्त बिता रहे हैं। यह ठीक है कि सभी सिक्ख माता-पिता ख़ुद भी सिक्ख विचारधारा की अपेक्षित समझदारी नहीं रखते, लेकिन जो रखते हैं, उनका इसे अपने बच्चों तक न पहुंचाना और केवल उनकी अकादमिक प्राप्तियों पर ही गर्व महसूस किए जाना या संतुष्टि महसूस करना कदापि उचित नहीं।

अभी भी बिखरे हुए दानों का कुछ नहीं बिगड़ा, इन्हें समेट लेना चाहिए। यदि हम इस दिशा में अब भी अपनी उदासीनता, अपनी लापरवाही का त्याग करते हुए अपने बच्चों के लिए ख़ुद अनुकूल माहौल सृजित कर, उन्हें गुरमति विचारधारा की सर्वश्रेष्ठता का एहसास करवाते हुए इस विचारधारा के प्रमुख तत्व समझाने और दिखाने की दिशा में चल पड़ें, तो हमारी नयी पीढ़ी अपनी दुर्लभ और ख़ास तौर पर अमूल्य धार्मिक विरासत से बेगानगी की दीन-दशा को सहन करने की शिकार नहीं हो सकेगी। हमारे तक सिक्ख विचारधारा को पहुँचाने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने चारों साहिबाजादे कुर्बान कर दिए थे। आओ, इस हकीकत को भली-भाँति समझते हुए अपनी नयी पीढ़ी को स्कूली विद्या के साथ-साथ धार्मिक विद्या की घुट्टी अपने घरों में ही देने का सफल प्रयास करें!

'पीर मुरीदा पिरहड़ी' की अनोखी गौरव-गाथा : खिदराणे की जंग

– डॉ. जगजीवन सिंघ *

१७५६ विक्रमी की वैसाखी वाले दिन हुई ख़ालसा साजना की बड़ी ऐतिहासिक और इंकलाबी घटना के बाद, ख़ालसे का न्यारा तेज-प्रताप और उजाला (सत्य की रौशनी) ज्यों-ज्यों अधिक प्रकाशमान होता गया त्यों-त्यों बाईधार के पहाड़ी राजाओं और मुग़ल हाकिमों का दसम पातशाह के प्रति ईर्ष्यालु रवैया, विरोध तथा घेरा और अधिक तीव्र, हमलावर एवं तंग होता गया। फलस्वरूप सन् १७०१ ईस्वी के अंत से लेकर सन् १७०४ ई. के मार्च महीने तक दुष्ट मुगलों एवं पहाड़ी राजाओं के बड़े-बड़े भाड़े के लश्करों ने इक्का-दुक्का छोटी-मोटी मुठभेड़ों के अलावा थोड़े-थोड़े अरसे के बाद सतिगुरु के जॉनिसार योद्धाओं की अनोखी प्यार-दीवानी मुट्ठी भर फ़ौज के साथ श्री अनंदपुर साहिब में चार बड़ी जंगें लड़ी। इन जंगों की विशेषता यह रही कि चढ़ कर आए मुग़ल और पहाड़ी फौज के टिड्डी दलों को बड़ी संख्या में होंने के बावजूद, हर जंग में मुँह की खानी पड़ी।

मुगलों और पहाड़ी राजाओं की सेना जब युद्ध के मैदान में सतिगुरु जी के हाथों पराजित हो जाती तो कोई पेश चलती न देखकर आख़िरकार, तिलमिला कर अक्सर ही कई-कई दिनों तक श्री अनंदपुर साहिब नगर को घेर कर बैठी रहती। ऐसा करने के पीछे उनका उद्देश्य यह होता कि ख़ालसाई फ़ौज को बाहर से कोई जंगी मदद ख़ास कर रसद-पानी न पहुँचे। निष्कर्षत: भूख और प्यास के मारे सिंघों के हौंसले पस्त हो जाएं और वे अपने गुरु जी का साथ अर्थात् श्री अनंदपुर साहिब छोड़ कर भाग जाएँ। तुर्कों और पहाड़ी राजाओं की इस घटिया रणनीति ने चाहे पहले भी कुछ एक जंगों के दौरान गुरु के प्यारे सिंघ शूरवीरों के समर्पण अर्थात् सब्र, संतोष और आस्था का कड़ा इम्तिहान लिया था, परन्तु श्री अनंदपुर साहिब की सबसे अधिक लंबी और थका देने वाली जंग, जो अंदाज़न सन् १७०४ ई. के मई (ज्येष्ठ) महीने से आरंभ होकर, तत्पश्चात् रुक-रुक कर चलती हुई, दिसंबर, १७०४ ई. (६ पौष, संवत् १७६१ विक्रमी)[१] अर्थात् सतिगुरु के श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने तक निरंतर जारी रही। यह जंग उनके समर्पण अर्थात् प्यार और सिक्खी-आस्था को परखने वाली सबसे अधिक कड़ी परीक्षा थी।

इस जंग के आरंभ में सतिगुरु की हजूरी में हक-सच और धर्म के लिए अपना आप कुर्बान करने वाले लगभग ५००० सिंघ शूरवीरों की फ़ौज मौजूद थी, जबकि दूसरी तरफ़ श्री अनंदपुर साहिब के चारों तरफ घेरा डालने के लिए समय के ज़ालिम शासकों की हमलावर होकर आई भाड़े की मुग़ल व पहाड़ी फ़ौज की कुल संख्या

*प्रोफेसर, पोस्ट-ग्रेजुएट पंजाबी विभाग, माता गुजरी कॉलेज, फतिहगढ़ साहिब, फोन : ९९१४३-०१३२८

अंदाज़न सात-आठ लाख के करीब थी।[२] संख्या की असमानता के पक्ष से दुनिया के इतिहास की यह एक बेमिसाल जंग थी, जिसमें सिंघों के धैर्य और वीरता की अजीब परख हुई। एक महीने का युद्ध जब कोई फ़ैसला न कर सका तो ख़ालसे को उबाने और थकाने की रणनीति के अंतर्गत दुश्मन ने दम लेकर लड़ना शुरू कर दिया। कई-कई दिन जंग के बिना बीतने लगे, परन्तु श्री अनंदपुर साहिब की नाकाबंदी दिनो-दिन और ज्यादा सख्त होती गई। अनाज के ज़ख़ीरे ख़त्म होने लगे। पशुयों के लिए चारा ख़त्म होने लगा। घोड़े-हाथी भूख से मरने लगे।

सिंघ योद्धा रात के समय दुश्मन फौज पर अचानक हमला कर अन्न और चारा भारी मात्रा में छीन लाते, जबकि इस कार्यवाही में बड़ा जानीमाली नुकसान भी हो रहा था। लगातार शहादतों के कारण सिंघ वीरों की संख्या दिनो-दिन कम हो रही थी। आश्विन महीने के आखिर तक श्री अनंदपुर साहिब के अंदर लगभग २००० सिंघ योद्धा ही बचे थे। जब सिंघ भूख- प्यास और लगातार जंग करने के कारण निढाल एवं कमज़ोर पड़ गए तो उनमें से कुछ सिंघों के मज़बूत इरादे भी समयानुसार डगमगा गए। कमज़ोर मन में श्री अनंदपुर साहिब अर्थात् सतिगुरु को छोड़ने का ख़्याल भारी हो गया, परन्तु इसे एकदम उनकी रूह की स्वीकृति न मिली। कुछ दिनों तक सभी दुविधा में पड़े रहे। तत्पश्चात् कोई पेश चलती न देख आख़िरकार इकठ्ठे होकर सतिगुरु के सम्मुख आए और गले में पल्लू डाल कर, सिर झुका कर खड़े हो गए। किसी में कुछ बोलने की हिम्मत नहीं थी। सब कुछ जानने वाले सतिगुरु ने कुछ पल प्रतीक्षा करने के बाद इस प्रकार इकठ्ठा होकर आने का कारण पूछा, तो उनमें से प्रमुख सिंघ भाई महां सिंघ ने विनती की, ''सच्चे पातशाह जी! हमने घर जाना है! हमसे अब और लड़ा नहीं जाता!''

अपने नादी पुत्रों (ख़ालसा) को अपने बिंदी पुत्रों (चार साहिबज़ादे) से भी अधिक मोहब्बत करने वाले सतिगुरु के लिए यह पल बड़े वैराग्यमयी और चिंतन करने वाले थे। कलगियां वाले पातशाह ने बड़े रहम के साथ, भूख के हाथों हारे अपने प्यारे (सिंघों) की तरफ देखा। कुछ समय ख़ामोश रहने के बाद भरे मन के साथ किसी दैवी उदासी में वचन किया, ''बेशक चले जाओ, मगर जाते-जाते गुरु-मुरीद का प्यार तोड़ने की याद या निशानी के तौर पर एक 'बेदांवा' (सम्बंध-विच्छेद पत्र) हमें लिख कर दे जाओ!'' प्यार के अटूट बंधन की ऊँची समझ और इसके दावे, अधिकार, अपनत्व एवं हक से लबरेज़ सतिगुरु के ये अति गहरे और भावपूर्ण वचन जैसे ही भाई महां सिंघ के कानों में पड़े, उनका पूरा शरीर प्रचंड प्यार-अनुभव से काँप उठा, थरथरा उठा, वैराग्य में आई रूह कराह उठी। अति घबराए हुए ने नीर भरी आँखों से रोते-गिड़गिड़ाते हुए पूछा, ''बेदावा! सच्चे पातशाह, यह क्या कह रहे हो?'' हजूर पातशाह ने एक पिता की भांति भाई महां सिंघ की पीठ पर हाथ फेरा। तत्पपूचात् पूरे अपनत्व और अधिकार-भाव के साथ वचन किया, ''प्यारे ख़ालसा जी! हमारा कहना है कि आप भले सभी लोग चले जाओ, मगर जाने से पहले गुरु-शिष्य के मुकद्दस प्यार-सम्बन्ध को तोड़ने अर्थात् प्यार

वाले रिश्ते के दावे को छोड़ने के निशान, चिह्न या सबूत के तौर पर हमें एक कागज़ पर ये शब्द लिख कर, दस्तख़त कर दे जाओ कि ''आज के बाद आप हमारे (गुरु) नहीं और हम आपके (सिक्ख) नहीं।''

सतिगुरु के उपरोक्त महावैराग्यमयी और रमज़मयी वचन सुन कर भाई महां सिंघ तथा उनके शेष ३९ साथी गहरे दुख और बेगानगी की अवस्था में कुछ समय विचारों के समुद्र में डूबे रहे। तत्पश्चात् पता नहीं, अकाल पुरख परमात्मा के कौन-से ईश्वरीय हुक्म में एक (भाई महां सिंघ) ने साहस बांध कर कागज़ पर ये लफ़्ज़ लिखे। फिर सभी ने बारी-बारी से भरे मन और काँपते हुए हाथों से इस पर अपने दस्तख़त किए और हजूर को देकर चुपचाप श्री अनंदपुर साहिब से विदा हो गए। ४० अति प्रिय मुरीदों (सिंघों) द्वारा बेदावा देकर चले जाने की घटना, मुरीद-प्रेम में भीगे, अति संवेदनशील सतिगुरु के लिए, निस्संदेह एक असहनीय सदमे की भांति थी, लेकिन बहुत ही बड़ी हिम्मत वाले, क्षमाशील पातशाह ने इसे ईश्वरीय रज़ा जानते हुए अपने सीने पर सह लिया।

दूसरी तरफ़ गुरु के मुरीदों के लिए यह घटना तुलनात्मक आधार पर बहुत ज़्यादा नाख़ुशगवार और कष्टदायक थी। सतिगुरु जी के वियोग ने उनके हृदय को अंदर तक घायल कर दिया था। उदासी और दुख के भाव मन पर भारी थे।

गुरु के वियोग के तीक्ष्ण तीरों से बेधे हुए ये सिंघ जब अपने-अपने घर पहुँचे तो सारा घटनाक्रम पता चलने पर घर के किसी भी प्राणी ने उनके किए को अच्छा न जाना। सबने यही कहा कि आपने अच्छा नहीं किया। पारिवारिक सदस्यों विशेषतया स्त्रियों द्वारा दिए उलाहनों ने उनके मन में कमज़ोर होने के अलावा अपराधी होने, ग्लानि एवं पश्चाताप का ऐसा हुड़दंग मचाया कि उनके पहले से ही उदास और दुखी मन कराह उठे, तड़प उठे। सभी फफक-फफक कर रोए।

जैसे-जैसे श्री अनंदपुर साहिब की तबाही, परिवार विछोड़े, चार साहिबज़ादे और माता गुजरी जी की शहादत, माछीवाड़े के जंगलों में कलगियां वाले पातशाह की वैराग्यमयी अवस्था आदि के दुखदायी समाचार इन सिंघों के कानों में पड़े वैसे-वैसे जुदाई और पश्चाताप का भाव और भी प्रचंड होता गया। समय के वेग के साथ सहज ही वियोग की प्रचंड अग्नि ने जहाँ एक तरफ़ सतिगुरु जी के प्रति उनके प्यार एवं वैराग्य को और भी निखार प्रदान किया वहीं बेमुख होने के गुनाह के शिद्दती एहसास व पश्चाताप के निर्मल आँसुओं के साथ पुनः ताज़ा और उज्जवल हुए उनके हृदय में सतिगुरु जी से मिलने की इच्छा भी ज़ोर पकड़ने लगी।

इस बेहद सृजनात्मक माहौल में सतिगुरु के प्यार में रंगी माई भागो जी की रचनात्मक वृत्ति और प्रभावशाली प्रेरणा ने, सोने पर सुहागे का कार्य किया। उन्होंने एक प्रकार से इन सिक्खों की अपने सतिगुरु जी से टूटी प्रीत को पुनः जोड़ने के अलावा उन्हें सतिगुरु की प्यार भरी नज़र और अपार बख्शिश अर्थात् मुक्ति की रहमत के हकदार बनाने का रास्ता भी सपाट किया। फलस्वरूप ४० सिंघों ने हुई भूल को क्षमा कराने हेतु सतिगुरु जी से मिलने और साथ ही ज़ालिम

मुग़ल हुकूमत के विरुद्ध शुरू किए संघर्ष में उनका मरते दम तक साथ देने का दृढ़ फ़ैसला किया। उन्हें ख़बर मिली कि कलगियां वाले पातशाह इन दिनों मालवा क्षेत्र में दीना नामक गाँव में ठहरे हुए हैं। मुग़ल फ़ौज बहुत बुरी तरह से उनके पीछे लगी हुई है। किसी समय भी मुगल फ़ौज के साथ उनका मुकाबला हो सकता है। ४० सिंघों के हथियारबंद जत्थे ने भाई महां सिंघ की कमान में कमर कसी, अरदास की और फिर दीना नामक गाँव की तरफ कूच कर दिया।

उधर फतह (विजय) की महान् ऐतिहासिक चिट्ठी 'ज़फ़रनामा' की रचना वाले गाँव दीना में चौधरी शमीर के पास अपने पड़ाव के आखिरी दिनों में सतिगुरु जी को अपने साधनों से पता चला कि सरहिंद के अत्याचारी सूबेदार वज़ीर खान को उनके दीना में ठहरे होने की ख़बर मिल गई है और वह उन्हें हाथों-हाथ गिरफ़्तार करने की मंशा से पाँच हज़ार के करीब घुड़सवार फ़ौज लेकर दीना नामक गांव की तरफ आ रहा है।

प्रेम की भांति जंग की अनोखी मर्यादा की पालना को बड़ी महत्ता और ध्यान प्रदान करने वाले तथा युद्ध-नीति के माहिर सतिगुरु ने आबादी वाले इलाके में जंग करना उचित न समझा। जंग के लिए मालवा क्षेत्र मरुस्थल बीयाबान जंगल में किसी खुली और उपयुक्त जगह की तलाश के खास मकसद को मुख्य रखते हुए उन्होंने दीना नामक गाँव छोड़ने का फ़ैसला कर लिया। दीना से चलते समय नीले बाणे में सुसज्जित और हथियारबंद होकर घोड़े पर सवार कलगियां वाले प्रीतम के साथ भाई मान सिंघ और जान पर खेल जाने वाले बहुत-से नये सजे अमृतधारी सिंघ शूरवीर घोड़ों पर सवार थे। इसके अलावा तनख़्वाह पर भर्ती किये बहुत-से जवान तोड़ेदार बंदूकों, शस्त्रों सहित गुरु जी के हमसफ़र थे। जलाल, भगता आदि गाँवों से गुज़रने के बाद गुरु जी कोट-कपूरा की धरती पर जा पहुँचे। इसी समय के दौरान दूसरी तरफ़ ४० मझैल सिंघों और झबाल निवासी माई भागो जी का जत्था जब दीना गाँव पहुंचा तो सतिगुरु जी वहाँ से निकल चुके थे। सतिगुरु जी के दीदार की तीव्र प्यास को हृदय में बसा, वे सतिगुरु जी की राह में उड़ती धूल के पीछे-पीछे चलते गए, मगर विभिन्न पड़ावों पर कहीं भी सतिगुरु जी के निकट जाने और उनके सम्मुख होने की हिम्मत न जुटा सके। वे दूर से ही मौका तलाश कर गुरु जी का दीदार करते, कुर्बान जाते और रो पड़ते।

उधर कोटकपूरा से आगे सच्चे पातशाह का काफ़िला ढिल्लवां कलाँ, जैतो, सुनिआर और रामेआणा होता हुआ खिदराणे की ढाब की तरफ चल पड़ा। रामेआणा से चलते समय सतिगुरु जी की फ़ौज में अंदाज़न सौ से अधिक और विशुद्ध बंदगी वाले सिंघ जुड़ चुके थे। इस प्रकार कुल मिला कर तेग़ों, तीर-कमानों और बंदूकों से लैस तकरीबन ५०० श्रद्धावान सिंघ शूरवीरों की घुड़सवार फ़ौज सतिगुरु जी की कमान तले मौजूद थी। रामेआणा से चल कर जब सतिगुरु जी का जत्था खिदराणे की ढाब नामक स्थान पर पहुँचा, तो जंगी नज़रिए से मुगलों को करारी टक्कर देने हेतु, सतिगुरु जी को यह जगह अत्यधिक जँच गई। इतने में सतिगुरु जी को अपने ख़ुफ़िया तंत्र से यह जानकारी मिली कि वज़ीर खान की फ़ौज २-४ कोस की दूरी पर

उनका पीछा करती आ रही है। मौका संभालते हुए गुरु जी ने शीघ्र ढाब और उसके आस-पास वाली जगह का ध्यानपूर्वक जायज़ा लिया। तत्पश्चात् इसके आगे कुछ दूरी पर स्थित ऊँची टिब्बी (टीला) यह वो पवित्र ऐतिहासिक स्थान है जहाँ आजकल गुरुद्वारा टिब्बी साहिब सुस्थित है) पर जा डेरा लगाया। दुश्मनों को करारे हाथ दिखाते हुए मोर्चाबंदी की गई, जिसके अंतर्गत सिंघों विभिन्न दल ढाब के साथ लगते छोटे-छोटे टीलों पर खड़ी झाड़ का सहारा लेकर दुश्मन के आने के इंतज़ार में, ताक लगा कर बैठ गए। सारी तैयारी के बाद, ऊँचे टीले पर दृढ़तापूर्वक विराजमान सेनापति सतिगुरु जी ने गौर से देखा कि इस जगह से ढाब का पूरा इलाका उनके तीरों की मार के तले है।

इतने में सतिगुरु जी की प्यार-डोर में बंधा ४० मझैल सिंघों और माइ भागो जी का शस्त्रबद्ध जत्था भी सतिगुरु जी के काफ़िले के पीछे-पीछे वहाँ आ पहुंचा। सतिगुरु जी द्वारा की गई मोर्चाबंदी देख उन्हें यह समझते देर न लगी कि वज़ीर खान की फौज का आगे बढ़ कर मुकाबला करने और मर-मिटने का उपयुक्त समय अब बिल्कुल निकट आ पहुँचा है। गुरु के प्यारे ४० जांबाज मझैल योद्धाओं ने बिजली की फुर्ती से ढाब की पूरब दिशा में सूखे तालाब वाली लंबी भुजा (जिस तरफ से वजीर खान के लश्कर के हमलावर होकर आने की पूरी-पूरी संभावना थी) को अपनी रणभूमि बनाने का निर्णय किया। सूखे ताल की इस लम्बी भुजा (यह वो पवित्र ऐतिहासिक स्थान है, जहाँ आजकल गुरुद्वारा तंबू साहिब सुशोभित है)[३] पर क्रमशः अनेक झाड़ उगी हुई थी, सिंघों ने बड़ी समझदारी के साथ इस पर अपनी चादरें, कुर्ते, कछहिरे तथा अन्य वस्त्र फैला दिए। ऐसा करने के पीछे उनका उद्देश्य यह था कि वज़ीर खान इस जगह को गुरु जी के तंबू (टिकाने वाला स्थान) समझे और यकीनी तौर पर सीधा इधर ही आए, प्यारे सतिगुरु जी की तरफ कदाचित न जाये। अगर जाये तो उनकी लाशों पर से गुज़र कर ही जाये। दरअसल लकड़ी में आग और फूल में खुशबू समाने की भांति, उनके इस विशुद्ध और अति प्रिय मकसद में बेमिसाल समर्पण और कुर्बानी का जज़्बा समाया हुआ था। बनाई रणनीति के अधीन वे बंदूकों और अन्य शस्त्रों से पूरी तरह से लैस होकर, झाड़ की ओट में बैठ गए। फिर भूखे भेड़िये और बाज़ की भांति लगे दुश्मन फ़ौज की प्रतीक्षा करने।

सतिगुरु के ठिकाने की खोज करता हुआ वज़ीर खान का फ़ौजी लश्कर आगे बढ़ता आ रहा था। जैसे ही वह मझैल सिंघों के छिपे होने वाली जगह के पास पहुँचा तो उसने उस जगह को सतिगुरु का निवास जानते हुए उन्हें हाथों-हाथ पकड़ लेने के इरादे से, बिना कोई योजना बनाये, जल्दबाजी में धावा बोल दिया। मौका संभालते हुए घात लगा कर बैठे बेदावे वाले ४० सिक्खों, माई भागो जी और उनके जत्थे में शामिल कुछ अन्य वीरों ने दुश्मनों पर निशाने बाँध कर गोलियों की वर्षा करनी शुरू कर दी। एक पहर तक गोलियों की वर्षा होती रही। वज़ीर खान की फ़ौज में खलबली मच गई।

दूर ऊँचे टीले पर बैठ कर सारा जंगी नज़ारा देख रहे अंतरयामी पातशाह जी को समझते देर न

लगी कि श्री अनंदपुर साहिब में उन्हें छोड़ कर चले गए ४० सिक्ख, आज दोबारा जान हथेली पर रख कर मैदान-ए-जंग में अपने शूरवीरता वाले कारनामों द्वारा हमें मनाने और रिझाने आ पहुँचे हैं। माथे पर लगे बेमुखतायी के धब्बे को मिटाने हेतु आज वे कुछ भी कर गुज़रने के लिए दृढ़ संकल्प किए हुए हैं। नादी पुत्रों अर्थात् अपने प्यारे ख़ालसे का प्रचंड समर्पण-भाव, दृढ़ निश्चय, जंगजू उमाह और कुर्बानी का जज़्बा देख कर सतिगुरु जी दया-भाव में आ गए। शिद्दती मुरीद-प्यार के अनोखे रंग में रंगे हुए गुरु जी ने टीले पर खड़े होकर अपने तीर-कमान से दुश्मन फौज पर तीरों की ऐसी वर्षा की कि देखते ही देखते अनेक सीने लहू-लुहान हो गए।

सतिगुरु द्वारा बरसाए तीरों की आवाज से ऐसा लग रहा था जैसे वे अपने बिछड़े मुरीदों की उनसे पुन: मिलने की प्रबल इच्छा-पुकार (गोलियों की आवाज़) को अपने तीरों की आवाज़ द्वारा, अनोखे रहस्यमयी अंदाज़ में स्वीकृति दे रहे हों। ऊपर से दोपहर हो रही थी। मझैल सिंघों की बंदूकों की गोलियाँ बेशक ख़त्म हो चुकी थीं, मगर उनकी गोलियों की आवाज़ (सच्चे पातशाह जी से पुन: मिलने और उनकी नज़र में स्वीकार होने की तीव्र पुकार/विनती) को, गहरे सांकेतिक स्तर पर तीरों के माध्यम से सतिगुरु की प्राप्त हुई स्वीकृति, शाबाशी और तेजस्वी आशीष के बड़ी रूहानी मौज ने उनमें नयी रूह फूँक दी थी। उन्होंने जाना कि बंदूक के बाद अब तेग़ का जलवा दिखाने का समय आ गया है। गुरु-प्रीति और धर्म-युद्ध की अनोखी उमंग में मख़मूर चालीस वीर अचानक तेग खींच कर प्रच्छन्न स्थानों से खुले मैदान में आ प्रकट हुए। तत्पश्चात् हवा-आंधी बन कर दुश्मन दल पर तब तक तेग़ चलाई, जब तक ये सभी ४० सिंघ शहीद होकर या गंभीर रूप से घायल होकर धरती पर गिर न पड़े।

४० सिंघों की शक्तिशाली दीवार के ढह- ढेरी हो जाने के बाद जब मुग़ल लश्कर ने बेदिली की हालत में बड़ी सावधानी के साथ आगे बढ़ने का यत्न किया तो ठीक उसी वक्त ऊँचे टीले की तरफ़ स्थित कई छोटे-छोटे टीलों पर से बंदूकों की गोलियाँ तीव्र वेग में बरसीं। दोबारा अचानक हुए बड़े जानी नुकसान तथा गोलियों की ज़ोरदार आवाज़ ने सूबा सरहिंद की फौज का दिल दहला दिया। सुन्न हुए सूबेदार ने मौत के मुँह पड़ने की बजाय खड़े पैर अपनी फौज को पीछे हटा लिया और खुद चौधरी कपूरे के साथ परामर्श करने लगा कि क्या किया जाये? कपूरे ने बताया कि सिंघों के कब्ज़े वाली ढाब के बिना, इस जंगल में दूर-दूर तक कहीं पानी नहीं और अगर उसने और जंग की तो संभावना यह भी है कि कहीं उसका पूरा लश्कर प्यास से ही तड़प-तड़प कर न मर जाए। बड़ा जानी नुकसान होने के कारण वज़ीर खान पहले से ही दहला हुआ था अब और भी दहल गया। वह उसी समय फ़ौज लेकर पीछे लौट गया। जाता हुआ मरे सिपाहियों की लाशें दफनाने की ज़िम्मेदारी वह चौधरी कपूरे को सौंप गया।

शाही फ़ौज के हरन हो जाने के बाद गुरु जी कुछ सिक्खों सहित उस जगह पहुँचे, जहाँ ४० मझैल सिंघों ने उनकी सेना के आगे मोर्चे लगा कर दुश्मन फ़ौज पर पहले ज़बरदस्त गोलाबारी

की और बाद में आगे बढ़ते हुए तेग़ के जौहर दिखाए थे। सतिगुरु जी ने देखा के वे सभी के सभी, भंवरे के शमां की लौ पर मर मिटने की भांति शहीद या गंभीर रूप से घायल होकर ज़मीन पर पड़े थे। इन प्यारे मुरीदों द्वारा सौंपा बेदावे वाला कागज़ सच्चे पातशाह जी ने अभी तक अपने पास संभाला हुआ था। प्रेमा-भक्ति और प्यार की अपनी अनोखी हृदयगत व्याकरण होती है। इसका वियोग इन्तज़ार और मिलन के भाव एवं दृश्य सचमुच ही बड़े अद्वितीय, असरदायक तथा यादगारी होते हैं। यही कारण है कि जहाँ ४० सिक्खों की सतिगुरु जी से वियोग की घटना और वियोग के समय की समूची मनोवस्था अत्यधिक मार्मिक और दिल को छू लेने वाली थी, वहीं खिदराणे की जंग में शहादत के माध्यम से सतिगुरु जी के साथ हुए इनके महामिलन का वृत्तांत इससे भी कहीं अधिक प्रभावशाली, वेगमयी, गौरवशाली, विस्मयकारी और दिल को चीरने वाला है।

सतिगुरु जी बारी-बारी से सभी शहीद सिंघों के पास गए। प्यार में लबरेज़ गुरु जी ने कुछ एक के हाथों को अपने माथे से लगाया, अपने रुमाल से कुछ एक के मुखड़े साफ़ किये, कईयों को गोद में लेकर माँ की तरह दुलारा और कईयों के माथे चूमे। धरती ने पहली बार हजूर की आँखों में इतने आँसू देखे। इस पक्ष से सतिगुरु जी के जीवन का यह आखिरी धर्म-युद्ध, जो २१ वैसाख, संवत् १७६२ विक्रमी को लड़ा गया, सचमुच अति निराला, जज़्बाती और आश्चर्यजनक था। कृपालु गुरु जी ने अपने इन प्यारे मुरीदों (शहीदों) को, किसी को अपना पाँच हज़ारी और किसी को अपना दस हज़ारी कह कर नवाजा। इन चालीस में से एक अभी जीवित था। गुरु जी उसके पास गए। वे भाई महां सिंघ थे। सतिगुरु जी के पवित्र कदमों की आहट सुनकर भाई महां सिंघ ने आँखें खोलीं। उन्होंने देख लिया था कि कौन हैं। उन्हें पता था कि पातशाह अवश्य आएंगे। दरअसल वे अकेले नहीं सिसक रहे थे, इन्तज़ार कर रहे थे, अलबत्ता उनके माध्यम से सभी के सभी ४० सिंघ सिसक रहे थे, सतिगुरु जी के आने का बेताबी के साथ इन्तज़ार कर रहे थे।

कुछ पल कृपा भरी नज़र से देखने के बाद पातशाह भाई महां सिंघ के पास बैठ गए। सिसकते हुए भाई महां सिंघ के शीश को जब उन्होंने अपनी गोद में लिया तो भाई महां सिंघ की आँखों में आँसू आ गए। गुरु जी के कर्म का कोई शुमार न रहा। दयालु सतिगुरु जी ने ईश्वरीय विह्वलता में वचन किया— ''प्यारे महां सिंघ! कुछ माँग लो! आज जो मांगोगे, मिलेगा!'' परोपकारी मुरीद भाई महां सिंघ ने मासूमियत भरे शुक्राने में कहा— ''हजूर! बेदावा फाड़ दीजिए!'' कृपालु सतिगुरु ने फिर, वचन किया— ''कुछ और माँग लो।'' ''बस बेदावा फाड़ दीजिए!'' भाई महां सिंघ ने पुनः वितनीपूर्वक कहा। गुरु जी ने उसी समय बेदावा निकाला, भाई महां सिंघ को दिखाया और फिर उसे फाड़ कर हवा में उड़ा दिया। सिसक रहे भाई महां सिंघ ने दोनों हाथ उठा कर गुरु जी का शुक्राना किया। इसके बाद अपने मेहरबान और बख़शिंद सतिगुरु जी की गोद में सदा के लिए सो गये। कृपा के दाता सतिगुरु जी ने भाई महां सिंघ

सहित सभी चालीस शहीद सिंघों को 'मुकते' पदवी प्रदान कर, जंग वाले स्थान तथा खिदराणे की ढाब का नाम 'मुक्ति का सर' अर्थात् 'मुकतसर' रखा। इस महान ऐतिहासिक स्थान पर आजकल एक विशाल अमृत सरोवर और इसके किनारे गुरुद्वारा टूट्टी गंढी साहिब सुशोभित है।

जैसे ही भाई महां सिंघ ने श्वास त्यागे, सिंघों वाले शस्त्रधारी खालसाई वेष वाली एक घायल वीरांगना स्त्री ने सतिगुरु जी के चरणों पर् अपना शीश झुकाया। यह माई भागो जी, माझा क्षेत्र की सिंघनी, जो इन ४० सिंघों को अपने साथ ऐसे लेकर आई थी, जैसे माँ अपने बच्चों को लेकर आई हो। उसने गुरु जी से बिछड़े इन मुरीदों (शहीदों) की वियोगमयी गाथा गुरु जी को सुनाई। इन प्यारे मुरीदों (शहीदों का) दाह-संस्कार सतिगुरु जी ने अपने हाथों से किया। जहां दाह-संस्कार हुआ, उस पवित्र ऐतिहासिक स्थान पर आजकल गुरुद्वारा शहीद- गंज साहिब सुस्थित है।[४]

इस अनोखे ऐतिहासिक वृत्तांत का सार-तत्व यह है कि माझा क्षेत्र के ४० सिंघों द्वारा अपने गुरु के प्रति प्यार का दावा या हक छोड़ने का प्रतीक; सबूत या गवाह बना 'बेदावे' वाला कागज़, निस्संदेह प्यार की डोर में बंधे दोनों पक्षों (पीर और मुरीद) के लिए अति नाख़ुशगवार और दुखदायी होने के अलावा एक अति अहम, सूक्ष्म, भावपूर्ण और कीमती दस्तावेज़ था। यही कारण है कि जहाँ एक तरफ़ अनेक खतरनाक घटनाक्रमों और बड़े संकटों में से गुज़रने के बावजूद सतिगुरु जी ने इस 'बेदावे' वाले कागज़ को, छोड़ कर गए अपने मुरीदों के पुन: मिलने तक प्रतीक्षा करते हुए अपने पास संभाल कर रखा था, वहीं दूसरी तरफ़ सतिगुरु जी को संकट में छोड़ कर चले जाने वाले ४० मुरीदों (सिंघों) की गुरु के वियोग में तड़पती आत्मायों को भी खिदराणे की जंग में शहादत का जाम पी जाने के बावजूद तब तक चैन, सुकून और मुक्ति नहीं नसीब हुई थी, जब तक कि उनके अगुआ भाई महां सिंघ ने श्वास त्यागने से पूर्व, परोपकार से भरी अपनी अश्रुयों से भीगी विनती द्वारा, सामूहिक रूप से लिखा 'बेदावा' सतिगुरु जी से फड़वा नहीं लिया था।

संदर्भ-सूची :

१. प्रो. साहिब सिंघ : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, १९७८ (चौथी बार), पृष्ठ १५९ और १६८

२. स. हरिंदर सिंह महबूब, सहिजे रचिओ खालसा, अशोक बुक डिपो, गढ़दीवाला, १९८८, पृष्ठ ४०९

३. प्रो. करतार सिंघ, सिक्ख इतिहास, भाग-१, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २००३ (सातवीं बार), पृष्ठ ४४३

४. प्रो. करतार सिंघ, सिक्ख इतिहास, भाग- शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, २००३ (सातवीं बार), पृष्ठ ४४५

धनु जननी जिनि जाइआ धंनु पिता परधानु

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

कोई भी विचार या दर्शन पीढ़ी–दर–पीढ़ी यात्रा करता हुआ परिपूर्णता व स्थायित्व प्राप्त करता है और अपने ठोस आधार के कारण स्वीकार्यता प्राप्त कर समाज का अभिन्न अंग बन जाता है। विचार की स्वीकार्यता इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी यात्रा की पद्धति कैसी थी। आज निरंतर चिंता व्यक्त की जा रही है कि युवा सिक्ख पीढ़ी को धर्म व आचार के साथ कैसे जोड़ा जाये। नई पीढ़ी की उदासीनता से धर्म पर संकट की आशंकायें दृष्टिगोचर हो रही हैं। इस सम्बन्ध में निजी सोच व उपायों पर ऊर्जा व्यय करने से श्रेष्ठ गुरबाणी की शरण लेना है। एक सिक्ख के लिये श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी में सारे निदान उपलब्ध हैं। यह निर्विवाद तथ्य है कि गुरु साहिबान ने संसार को जीवन की जो राह दिखाई उससे श्रेष्ठ कोई ढंग संसार में उपलब्ध नहीं है। उन्होंने परमात्मा, संसार, जीवन का सत्य दिखा कर सदियों से चले आ रहे भ्रम तोड़े, विषमताओं का निवारण किया और जीवन के सहज व सरल रूप के दर्शन कराये। यही कारण था कि करोड़ों की संख्या में लोग अपने पुरातन विश्वास त्याग कर सिक्ख बन गये। इनमें रंक से लेकर राजा तक, अज्ञानी से महा ज्ञानी तक, निर्धन से धनवान तक सभी वर्गों के लोग सम्मिलित थे। मानव इतिहास में जितने भी महापुरुष हुए उनका मूल्यांकन बाद में हुआ, किन्तु श्री गुरु नानक साहिब ऐसे व्यक्तित्व थे जो अपने जीवन–काल में ही पूज्यनीय हो गये थे। उनकी कीर्ति दूर–दूर तक फैली, जिससे बाद में श्री करतारपुर साहिब, जो श्री गुरु नानक साहिब जी के सांसारिक जीवन के अंतिम चरण का स्थायी निवास था, धर्म व अध्यात्म के नये व बड़े केंद्र के रूप में तेजी से उभरा। गुरु–परंपरा का अंतिम पड़ाव श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के रूप में प्रकट हुआ। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु नानक साहिब जी के आह्वान ''जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ॥'' को साकार करने वाले जाँनिसारों के समाज को अंतिम रूप दिया और इसे अकाल पुरख की फ़ौज की महान उपाधि से विभूषित किया। श्री गुरु नानक साहिब जी के विचार ने 'खालसा' के रूप में अपनी स्वीकार्यता स्थापित की। इतिहास बताता है कि पीढ़ियां सिक्खी को बड़े ही श्रेष्ठ ढंग से संभाल कर आगे बढ़ाती रहीं। बाबा बुड्ढा जी के परलोक गमन के बाद उनके वंशज गुरु–घर की सेवा में रत रहे। भाई मरदाना

**ई–१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ–२२६०१७, फोन : ९४१५९–६०५३३, ८४९७८–५२८९९*

जी का कुल गुरु-घर का श्रद्धावान बना रहा। भाई मनी सिंघ जी का उदाहरण भी प्रेरक है। उदाहरणों की कमी नहीं है कि कैसे पीढ़ियों ने सेवा की, कुर्बानी दी।

जो विचार, जीवन-दर्शन इतना पुष्ट और सार्थक हो, उससे वर्तमान पीढ़ी का उदासीन हो जाना निश्चित ही दर्शाता है कि कहीं चूक हो रही है। जिस कौम के नौजवान कुर्बानी देने की, सेवा करने की होड़ लगाते रहे हों, उस कौम के वर्तमान नौजवान गुरु-घरों में ही नहीं दिखते। पहले माता-पिता अपने बच्चों को गुरु की सेवा में अर्पित कर दिया करते थे लेकिन आज माता-पिता बच्चों से नित्य गुरु-घर जाने, नितनेम करने जैसी अपनी बात मनवाने में खुद को असहाय महसूस कर रहे हैं। बच्चों की प्रेरणा का सर्वप्रथम स्रोत अपना घर होता है। क्या हमारे घर में सिक्खी है, जिससे बच्चे प्रेरित हो सकें? सामान्य मनोविज्ञान है कि किसी भी आयु का मनुष्य दिन भर में बहुत-सी बातें सुनता है, किन्तु अनुसरण प्राय: वही करता है जिसे अपने सामने घटित होते देखता है।

युवा पीढ़ी यदि अपने सिक्ख धर्म के प्रति उदासीन हो रही है तो इसकी उत्तरदायी वह पीढ़ी है जो दिशा देने की भूमिका में है। यदि कोई अपने धर्म पर दृढ़ता व समर्पण से चल रहा है तो उससे अधिक श्रेय के अधिकारी उसके माता-पिता हैं।

धनु जननी जिनि जाइआ धंनु पिता परधानु॥
सतगुरु सेवि सुखु पाइआ विचहु गइआ गुमानु॥
दरि सेवनि संत जन खड़े पाइनि गुणी निधानु॥
(पन्ना ३२)

श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि जिसने विकारों का त्याग कर दिया है और सांसारिक पदार्थों, स्थितियों के स्थान पर वाहिगुरु-परमात्मा की सेवा में सुख प्राप्त कर रहा है, उसे जन्म देने वाले माता-पिता धन्य हैं। ऐसे मनुष्य का पूर्ण समर्पण उसे परमात्मा से मेल योग्य बना देता है। सेवा व समर्पण की प्रेरणा उसे अपने माता-पिता से ही प्राप्त होती है। माता-पिता की प्रेरणा के बिना मनुष्य इस योग्य नहीं बन सकता। इसका भाव यह भी है कि अपनी संतान को प्रेरित करना माता-पिता का धर्म है। प्रेरणा धर्म के मार्ग पर चलने के लिए आवश्यक है। भाई लहिणा जी को और श्री गुरु अमरदास जी को भी प्रेरणा ही प्राप्त हुई थी, तभी अपने पुरातन विश्वास त्याग कर वे असली गुरु की शरण में आ गए थे। वही मनुष्य का सच्चा हित-चिन्तक है जो परमात्मा और सच के साथ जोड़ दे।

नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ बिनु नामै धिगु जीवासु॥
कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै
मै दसे प्रभु गुणतासु॥
हउ तिसु विटहु चउ खंनीऐ मै नाम करे परगासु॥
(पन्ना ४०)

जो अज्ञानी है, अबोध है अथवा परमात्मा की शरण में नहीं गया है, उसे ऐसे शुभचिंतक की बड़ी आवश्यकता है जो उसे परमात्मा के गुण, महानता का ज्ञान करा सके, उसे नाम की महिमा बता सके, क्योंकि एकमात्र परमात्मा का नाम

जपने से ही मन की भटकन दूर होती है, मन स्थिर होता है और तृप्त होता है। जिसका मन परमात्मा में नहीं रमा हुआ है, उसका जीवन धिक्कार योग्य है। बालक जीवन आरंभ करते ही संतृप्ति की खोज में लग जाता है। गुरबाणी के अनुसार बालक का जीवन सर्वप्रथम दूध, खीर में तृप्ति का अनुभव करना चाहता है। उसके दूध-प्रेम के उदाहरण बार-बार गुरबाणी में मिलते हैं। जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, उसकी तृप्ति की खोज का विस्तार होता जाता है। माता-पिता अपनी संतान को संतृप्त, संतुष्ट करने को अपने जीवन की प्राथमिकता बना लेते हैं, क्योंकि वही अपनी संतान के सर्वाधिक निकट होते हैं। उन्हें ही अपनी संतान के भविष्य और ख़ुशी की सर्वाधिक चिंता होती है। माता-पिता अपनी संतान की प्रसन्नता हेतु कई बार उनकी सर्वथा अनुचित इच्छाएं भी पूरी करते नजर आते हैं। इससे वे अपनी संतान का भविष्य अंधकारमय बनाते हैं। यदि माता-पिता श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के उपदेशों पर चलें तो वे अपनी संतान को परमात्मा के गुण, नाम की महिमा से अवगत करायेंगे और सच्ची तृप्ति के लिये प्रेरित करेंगे। यह किसी के लिये किया जाने वाला महान परोपकार है। इसी कारण उपरोक्त गुरु-वचन में कहा गया है कि परमात्मा से जोड़ने वाले के आगे तो अपने तन के चार टुकड़े कर सौंप देना चाहिये। माता-पिता अपनी संतान के हित के प्रति गंभीर हैं तो उनका प्राथमिक व प्रमुख कर्त्तव्य बन जाता है कि अपनी संतान के समक्ष परमात्मा की महानता, नाम जपने के सुफल को प्रकट करें। यह उसी स्थिति में संभव है जब माता-पिता स्वयं नितनेम का भावना और अनुशासन से पालन करते हों; उनके व्यवहार से परमात्मा के प्रति आभार व संतोष प्रकट होता हो। यदि माता-पिता को नितनेम, नाम-सिमरन से प्रफुल्लता प्राप्त होती है, तो संतान स्वत: ही इस ओर प्रेरित होगी।

परमात्मा की महिमा अकथ्य है। इसके साथ ही गुरबाणी परमात्मा की भक्ति करने वाले को भी श्रेष्ठ स्थान पर सुशोभित करती है।

टहल करउ तेरे दास की पग झारउ बाल॥
मसतकु अपना भेट देउ गुन सुनउ रसाल॥

(पन्ना ८१०)

संसार की रीति है कि समर्थ के आगे सभी सिर झुकाते हैं। सांसारिक लोगों की कृपा व सानिध्य पाने को लोग लालायित रहते हैं, क्योंकि उनसे कुछ प्राप्त हो जाने की आशा होती है। परमात्मा की भक्ति भी बहुतायत लोग अपने हित के लिए करते हैं ताकि उनके सांसारिक मनोरथ सिद्ध हो सकें। उपरोक्त वचन में श्री गुरु अरजन साहिब जी ने उसकी सेवा की बात की है जिसने परमात्मा को अपना स्वामी धारण कर लिया है और दास-भाव से परमात्मा की भक्ति कर रहा है। गुरु साहिब जी ने कहा है कि परमात्मा का दास ऐसे सम्मान के योग्य है कि उसकी दास भाव से सेवा-श्रूषा हो और अपने सिर के बालों से परमात्मा के दास के चरण साफ़ किये जायें अर्थात् उसकी भी चरण-वन्दना की जाने योग्य है। इस सेवा का उद्देश्य धन, सम्पत्ति,

राज-पाट, बल, पदार्थ प्राप्त करना नहीं है। यह सेवा मात्र इस उद्देश्य से की जाती है कि परमात्मा के मोहक गुण उसके मुख से सुने जा सकें, क्योंकि दास को अपने स्वामी को निकट से जानने का सौभाग्य प्राप्त है। परमात्मा के गुण जानने के लिये उसके दास के चरणों में अपना मस्तक तक भेंट कर देना योग्य है। इसके सुख का वर्णन श्री गुरु अरजन साहिब ने अन्य वचन में अधिक स्पष्टता से किया है :

पाणी पखा पीसु दास कै तब होहि निहालु ॥
राज मिलख सिकदारीआ अगनी महि जालु ॥१ ॥
संत जना का छोहरा तिसु चरणी लागि ॥
माइआधारी छत्रपति तिन्ह
छोडउ तिआगि ॥१ ॥ रहाउ ॥
संतन का दाना रूखा सो सरब निधान ॥
ग्रिहि साकत छतीह प्रकार ते बिखू समान ॥२ ॥
भगत जना का लूगरा ओढि नगन न होई ॥
साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई ॥ ३ ॥
साकत सिउ मुखि जोरिऐ अध वीचहु टूटै ॥
हरि जन की सेवा जो करे इत ऊतहि छूटै ॥

(पन्ना ८११)

माता-पिता, क्योंकि अपनी अबोध संतान के सर्वाधिक निकट और सर्वाधिक हिताभिलाशी हैं, इसलिये आवश्यक है कि वे उपरोक्त वचन का पूरी एकाग्रता से पठन कर उसके मर्म को धारण करने का प्रयास करें जो उनकी सन्तान के लिये प्रेरणादाई बन सके। यह वचन संसार और संसार के रचनहार के मध्य, सांसारिकता और आध्यात्मिकता के बीच के अंतर को समझने में पूर्णत: सहायक है। स्पष्ट है कि परमात्मा के दास की सेवा ही पूर्ण व सच्चा आनन्द प्रदान करने वाली है, जिसकी खोज में मनुष्य यत्र-तत्र भटकता रहता है। इसके आगे राज-पाट, सम्पत्तियों, पदवियों का कोई मोल नहीं है। इन्हें त्याग कर भी यदि परमात्मा के दास की सेवा का अवसर प्राप्त हो तो उसमें आनन्द है। यदि परमात्मा के सबसे निम्न श्रेणी के सेवक की सेवा का भी अवसर मिले तो उसके लिये बड़े धनवान और शक्तिशाली महाराजा का संग भी त्याग किया जाना श्रेयस्कर है। परमात्मा के भक्त की रूखी-सूखी रोटी भी अनमोल उपहार की भांति है, जिसके समक्ष छत्तीस प्रकार के व्यंजन भी स्वादहीन और विष समान सिद्ध होते हैं। परमात्मा के भक्त का प्रदान किया हुआ फटा-पुराना वेश पहन कर भी प्रतिष्ठा कम नहीं होती, बल्कि बनी रहती है, जबकि परमात्मा से विमुख, अधर्मी के मूल्यवान वेश धारण करने के बाद भी उसे सम्मान प्राप्त नहीं होता, अपयश प्राप्त होता है। परमात्मा व धर्म के मार्ग के त्यागी, गुणहीन, अधर्म करने वाले का संग आत्मघात की तरह है। परमात्मा और उसके दास की सेवा विकारों, दुखों, आवागमन के चक्र से मुक्त करने वाली है।

आज मनुष्य ठीक वैसा ही व्यवहार कर रहा है, जिसका उपरोक्त वचन में खंडन किया गया है। सिक्ख के पास नितनेम करने, गुरु-घर में साधसंगत व सेवा करने का समय इसलिए नहीं है, क्योंकि वह धन, सम्पत्ति, शक्ति, सामाजिक प्रभुत्व अर्जित करने में व्यस्त है। उसे इनमें सुख,

आनन्द दिखाई देता है। वह धनी, प्रभावशाली की संगत प्राप्त करने को यत्नशील है और गुरबाणी, परमात्मा के भक्तों के संग की उपेक्षा कर रहा है। वह अपनी इन्द्रियों को तृप्त करने में लगा हुआ है। अपने मान-सम्मान के लिये वह बाह्य उपायों, वेश पर विश्वास कर रहा है। ये सारे प्रयास जहां उसे विनाश की ओर ले जा रहे हैं, वहीं परमात्मा से तोड़ रहे हैं, जो उसका उद्धारक है। मुख्यत: यही कारण हैं जो सिक्ख को सिक्खी से दूर करने वाले हैं। यह मान लिया गया है कि सत्ता, धन, संपदा, भोग-विलास के पदार्थ और रुतबा ही जीवन की उपलब्धि है। इसके लिये समय व ऊर्जा का लगना ही सार्थक मान लिया गया है। इसके सापेक्ष धर्म का स्थान निचली से निचली आवश्यकता बन गया है और अतिरिक्त समय का कार्य बन गया है। जब गुरसिक्ख इन कारणों से नितनेम करना, गुरु-घर में जाना स्थगित करता जाता है तो किस नैतिकता से वह अपनी सन्तान से धर्म-कर्म की आशा रख सकता है ? जब घर में ही प्रेरणा, उदाहरण नहीं है तो किसी बाहरी व्यक्ति अथवा संस्था से कैसे आशा की जा सकती है ? बाह्य स्रोत सहायक हो सकते हैं, किन्तु प्रमुख भूमिका परिवार में ही स्थापित होती है। अपने परिवार में जब पड़दादा और दादा के बलिदान, पिता के शौर्य के उदाहरण मौजूद मिलें तब बाबा अजीत सिंघ जी, बाबा जुझार सिंघ जी, बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ जी के बलिदान सहज व स्व प्रेरणा से संभव हो सके थे। जब बच्चे अपने माता-पिता, परिवार के बड़ों को नितनेम करते, नित्य गुरु-घर जाते और परमात्मा व गुरबाणी पर विश्वास करते तथा तद्नुसार आचरण करते देखने लगेंगे, उनमें स्वयं ही इस ओर उत्सुकता जागृत होने लगेगी। गुरबाणी का सर्वोच्च सम्मान उसको व्यवहार में उतारना है। सम्पूर्ण गुरबाणी मानव आचार की संहिता है। माता-पिता व परिवार के वरिष्ठ सदस्य अपनी अगली पीढ़ियों को वाहिगुरु, गुरबाणी के साथ जोड़ने का पुल हैं। उनका व्यवहार और प्रेरणा कितनी महत्वपूर्ण है, यह उन्हें भी समझने की आवश्यकता है।

गुरबाणी यह भी सीख देती है कि परमात्मा का भक्त होना कितने बड़े सम्मान का विषय है। यदि परमात्मा के भक्त की सेवा कर, उसे मस्तक अर्पित कर धन्य हुआ जा सकता है तो स्वयं भक्त होना जीवन की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि है। इससे परमात्मा की महानता का आभास स्वयं ही होने लगता है। इस संदेश का नई पीढ़ियों के मन में स्थान बना लेना आवश्यक है। यह तभी संभव है जब उन्हें नितनेम करने को उत्साहित किया जाये। आज भी उस पीढ़ी के सिक्ख मिल जायेंगे, जिन्हें उनके घर में प्रात: काल का नाश्ता तब मिलता था, जब वे गुरबाणी का पाठ कर लिया करते थे। ऐसे घरों में परिवार के सभी सदस्य संध्या काल में एक साथ बैठते थे और 'रहरासि साहिब' का पाठ किया जाता था। इस व्यवस्था का पुनर्जीवन होना वर्तमान परिस्थितियों में सर्वथा हितकारी है।

आज जब भौतिकतावादी और पदार्थवादी

काल में मनुष्य अधिक मुखर व आत्ममुग्ध हो गया दिखता है, उसे स्वयं में गुण ही गुण नजर आते हैं। अपने अवगुणों का भी औचित्य सिद्ध करके गुणों के रूप में व्यक्त करने की कला उसे बाखूबी आ गई है। गुरबाणी इस फरेब को तोड़ते हुए गुणों की पहचान बताती है और कर्त्तव्य भी।

बतीह सुलखणी सचु संतति पूत॥
आगिआकारी सुघड़ सरूप॥

(पन्ना ३७१)

इसके शाब्दिक अर्थ ही मर्म तक ले जाने वाले हैं। उपरोक्त वचन में एक सुघड़ स्त्री का उदाहरण दिया गया है जो सर्वगुण सम्पन्न है। वह शील और संयम में रहते हुए समस्त जीवन-मर्यादाओं का पालन करती है। उसके इस गुणवान जीवन का सुफल यह होता है कि वह श्रेष्ठ गुणों वाली सन्तान को जन्म देती है जो ज्ञानवान और संसार के सच को जानने में समर्थ है। उस स्त्री की श्रेष्ठता का आधार उसके मन में परमात्मा का वास होना है। अपनी इस श्रेष्ठ अवस्था से वह पूरे परिवार को प्रभावित करती है। इसमें माता की भूमिका को समझा जा सकता है। माता की महानता प्यार, वात्सल्य, करुणा, उदारता और सहनशीलता से अधिक अपनी सन्तान को पाल-पोस कर उत्तम गुणों से भरपूर करने तथा परमात्मा के लिये भावना में पूरी तरह रंग देने में है। भक्त शेख फरीद जी की माता ने भी ऐसा ही किया था, जिससे वे इतिहास का अमर पात्र बन गईं। आज ऐसी ही माताओं की आवश्यकता है जो अपनी सन्तान के मन में परमात्मा की भावना स्थिर कर सकें। एक बार सन्तान को नितनेम करने, साधसंगत में बैठने का चाव पैदा जो जाये, उसके पश्चात परमात्मा की कृपा स्वयं ही बरसने लगती है। कोई उससे दूर जा ही नहीं सकता। भक्त शेख फरीद जी को जब मुसल्ला बिछा कर नमाज पढ़ने का आनन्द आने लगा तो मिठाई के मिलने, न मिलने से वे ऊपर उठ गये। मन में प्रकट हुआ परमात्मा स्वयं ही अपने रंग में रंग देता है।

पिता हमारे प्रगटे माझ॥
पिता पूत रलि कीनी सांझ॥
कहु नानक जउ पिता पतीने॥
पिता पूत ऐकै रंगि लीने॥ (पन्ना ११४१)

सांसारिक माता-पिता परमात्मा ने इसी लिये दिये हैं कि वे अपनी अबोध संतान को उंगली पकड़ कर उस तक पहुंचा सकें जो उसका सच्चा माता-पिता, भाई, सखा है। यही उपाय है कि श्री गुरु नानक साहिब जी के फलसफे का दुर्लभ उपहार आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचता रहे।

पंचम पातशाह के परम मित्र : साँई मियां मीर जी

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

गुरु साहिबान द्वारा चलाए गए सिक्ख पंथ का उद्देश्य जालिमों के विरुद्ध संघर्ष छेड़ना और मानवता की रक्षा करना था। सिक्खों का संघर्ष भले ही अत्याचारी मुगल हुक्मरानों कि विरुद्ध अधिक रहा, परंतु फिर भी मानवतावादी मुस्लिमों के साथ गुरु साहिबान के बड़े ही आत्मीय संबंध रहे। ऐसे ही एक मानवतावादी व्यक्तित्व थे— साँई मियां मीर जी। आप पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के परम घनिष्ठ और अंतरंग मित्र थे।

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन : साँई मियां मीर जी लाहौर के प्रसिद्ध सूफी दरवेश थे। आपका असली नाम शेख मुहम्मद फारुकी था। बताया जाता है कि आप खलीफा हजरत उमर के वंश से संबंधित थे। मुगल शाहजादे दारा शिकोह की पुस्तक 'सकीनात-उल-औलिया' में साँई मियां मीर जी का जन्म ९३८ हिज़री में हुआ बताया गया है, जिसके हिसाब से यह सन् १५३१ ई. बनता है, परंतु भाई कान्ह सिंघ नाभा कृत 'महान कोश' में आपका जन्म-वर्ष १५५० ई. दिया गया है।

इन दोनों स्रोतों में साँई मियां मीर जी के जन्म-स्थान और माता-पिता के विषय में समान जानकारी दी गई है। आपका जन्म-स्थान है— सिविस्तान या सीस्तान। आपके पिता का नाम काजी शाहीन दित्ता और माता का नाम बीबी फातिमा था। महज सात साल की उम्र में आपके पिता की मृत्यु हो गई और आप पिता की शबकत के साये से महरूम हो गये। माँ ने बड़ी मेहनत से पुत्र की शिक्षा का प्रबंध किया।

साँई मियां मीर जी के गुरु : शेख खिज्र : साँई मियां मीर जी शुरू से ही रूहानी तबियत वाले थे। आप महज १५-१६ वर्ष की आयु में ही गुरु की खोज में निकल पड़े थे और यह तलाश खत्म हुई शेख खिज्र तक आकर।

दारा शिकोह द्वारा रचित पुस्तक 'सकीनात-उल-औलिया' में वर्णन है कि शेख खिज्र सिविस्तान की पहाड़ियों में अकेले रहते थे। ये मात्र जंगली फल-फूल खाते थे और सर्दियों में एक कम्बली ओढ़कर गुजारा किया करते थे। इन्हें जंगली जानवरों से बेहद प्यार था और कई जानवर अक्सर इनके आस-पास ही रहा करते थे। कहते हैं कि एक बार शेख खिज्र तपतपाती धूप में एक पत्थर पर बैठे इबादत में लीन थे कि अचानक वहां सिविस्तान का सूबेदार आ निकला। उसने शेख पर छाया करने की कोशिश की तो शेख ने उसे वहां से तुरंत चले जाने के लिए कह दिया, ताकि छाया की वजह से

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

उनका ध्यान इबादत से भटक न जाए।

साँई मियां मीर जी ने कुछ वर्षों तक शेख खिज्र की सेवा में रहकर ज्ञान प्राप्त किया और फिर लाहौर आ गए।

साँई मियां मीर जी और कादरिया संप्रदाय : साँई मियां मीर जी कादरिया सिलसिले से संबंधित थे। कादरिया सिलसिला भारत के पुराने सूफी सिलसिलों में से एक है। इसकी स्थापना शेख अब्दुल कादिर जीलानी (१०७७-११६६ ई.) ने की थी। इन्हें 'गौस-उल-आज़म' और 'पीर दस्तगीर' नाम से भी पुकारा जाता है। इस संप्रदाय की भारत में आमद १४वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में हुई। पंजाब और सिंध में साँई मियां मीर जी ने इस संप्रदाय को स्थापित किया। साँई मियां मीर जी के आध्यात्मिक व्यक्तित्व और उल्लेखनीय सेवा-कार्यों की बदौलत यह संप्रदाय पंजाब और सिंध के संपूर्ण क्षेत्र में अत्यंत लोकप्रिय हो गया।

आध्यात्मिक व्यक्तित्व : सिक्ख स्रोतों में साँई मियां मीर जी का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया गया है। आप पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी और छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के अत्यंत निकटवर्ती मित्र थे। सिक्ख परंपरा के अनुसार श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब की आधारशिला साँई मियां मीर जी ने रखी थी।

साँई मियां मीर जी उच्च आचरण वाले सूफी फकीर थे। आपका स्वभाव मानम-प्रेमी और विनम्र था। इसी कारण आप पूरे देश में अत्यंत लोकप्रिय थे। बादशाह जहांगीर और शाहजहां आपका बेहद सम्मान करते थे। बेगम नूरजहां विवाह से पहले हजरत के बड़े श्रद्धालुओं में से एक थी। मुगल शाहजदा दारा शिकोह भी आपकी शिष्य परंपरा में शामिल था।

श्रेष्ठ मित्र : साँई मियां मीर जी जैसे खुद रूहानी व्यक्ति थे, वैसे ही आध्यात्मिक रंगत में रंगे पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी से आपके बड़े निकट और स्नेहिल संबंध थे। यही कारण है कि आपको श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की आधारशिला रखने के लिए आमंत्रित किया गया था।

सन् १६०६ ई. में जब पंचम पातशाह जी की शहादत का समय आया, तब साँई मियां मीर जी अत्यंत विचलित हो गये थे।

साँई मियां मीर जी अपने प्रभाव का उपयोग करके गुरु जी को दुष्ट जहांगीर की कैद से मुक्त कराना चाहते थे। साँई मियां मीर जी को मुगल बादशाह का यह मदांध रवैया बिलकुल भी पसंद नहीं आया। आप यह सब जानकर अत्यंत दुखी और क्रोधित थे।

परंतु पंचम पातशाह ने दुखी व क्रोधित मित्र को शांत किया और प्रभु का भाणा (हुक्म) स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया।

पंचम पातशाह की शहादत के बाद भी साँई मियां मीर जी के गुरु-घर के साथ अत्यंत निकटवर्ती के संबंध रहे। छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के प्रति आपके हृदय में एक विशेष भक्ति-भाव और लगाव था।

सन् १६०९ ई. में जहांगीर ने एक बार फिर

दुष्टता और धर्मान्धता का प्रदर्शन करते हुए छठम पातशाह को ग्वालियर के किले में कैद कर लिया। हजरत साँई मियां मीर जी इस मुश्किल घड़ी में भी गुरु-घर के साथ जुड़े रहे और गुरु-घर का समर्थन करते रहे।

अंतत: जहांगीर को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने गुरु जी से क्षमा मांगते हुए उन्हें मुक्त होने का आग्रह किया। छठम पातशाह अपने साथ जहांगीर की कैद में बंदी ५२ राजाओं को भी मुक्त करा लाये और 'बंदी छोड़ दाता' कहलाये।

इन सभी प्रकरणों में साँई मियां मीर जी ने पुरजोर ढंग से गुरु-घर का समर्थन किया और निडर होकर मुगल बादशाहों के कृत्यों का विरोध किया।

साँई मियां मीर जी की शिष्य परंपरा : साँई मियां मीर जी के पश्चात् उनकी एक लंबी शिष्य परंपरा रही है। दारा शिकोह ने अपने ग्रंथ 'सकीनात-उल-औलिया' में साँई मियां मीर जी के अनेक शिष्यों के बारे में जानकारी दी है।

लाहौर के रहने वाले मुल्ला ख्वाजा कलां, अब्दुर्रहमान मिर्ज़ा मदारी, सैयद अशरफ, मुल्ला हामिद गूजर, मियां मुहम्मद मुराद, बिहार के रहने वाले मुल्ला ख्वाजा बिहारी, शेख अब्दुल गनी, मुल्ला इब्राहिम रूही मेवाती, हाजी मईमुतुल्लाह सरहिंदी, कश्मीर के हाजी सालिह कशमीरी, लाहौर के ही मुल्ला अब्दुल गफूर, दारा शिकोह के गुरु खलीफा मुल्ला शाह, शेख अब्दुल खैर, शेख अब्दुल मकरीम, सरहिंद के रहने वाले हाजी मुस्तफा, हाजी सुलेमान, सियालकोट के हाजी ईसा सियालकोटी, शेख नरुद्दीन, आगरा के ईसा काज़ी, मुल्ला हामिद नामदसाज आदि-आदि प्रमुख शिष्य रहे हैं साँई मियां मीर जी के।

मुगल शाहजादा दारा शिकोह भी साँई मियां मीर जी की शिष्य परंपरा में ही रहा है।

इन सभी शिष्यों ने साँई मियां मीर जी की मानवतावादी जीवन-दृष्टि को और आगे बढ़ाया। दारा शिकोह ने लिखा है कि इन सभी शिष्यों में परस्पर आध्यात्मिक विचार-चर्चाएं चला करती थीं।

इस संपूर्ण शिष्य परंपरा के भी साँई मियां मीर जी की तरह गुरु-घर से स्नेहिल संबंध रहे और सभी गुरु साहिबान का पूरा सम्मान करते थे।

वैराग्यपूर्ण जीवन और देहावसान : साँई मियां मीर जी ने सारा जीवन बड़े वैराग्यपूर्ण तरीके से बिताया। आपने सारी उम्र आध्यात्मिक खोज को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया।

साँई मियां मीर जी का देहावसान १६३५ ई. में हुआ। आपका मज़ार लाहौर से कुछ दूरी पर स्थित 'हाशिमपुरा' में है। मुगल शाहजादे दारा शिकोह को भी सन् १६६१ ई. में देहांत के बाद साँई मियां मीर जी की दरगाह में ही दफनाया गया था।

वास्तव में, पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने सिक्खों के पवित्रतम स्थान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की आधारशिला मुस्लिम सूफी फकीर साँई मियां मीर जी से रखवाकर विश्व में मानव-समानता और मानव-प्रेम की एक नई मिसाल पेश की है।

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब

-डॉ. मनजीत कौर*

मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ॥
गुरमुखि पूरा जे करे
पाईऐ साचु अतोलु ॥१ ॥ रहाउ ॥
प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ॥
मोती हीरा निरमला कंचन कोट रीसाल ॥
बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ
गुर हरि धिआन निहाल ॥२ ॥
गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरि नाउ ॥
गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ॥
जे तिसु भावै ऊजली
सत सरि नावण जाउ ॥३ ॥
पूरो पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ॥
पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥
नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुण तास ॥

(पन्ना १७)

सिरीराग में उच्चारित इस पावन शबद में श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है कि मेरे पूर्ण प्रभु का अटल ठिकाना (निवास) उस सिंहासन पर है जो स्वयं सम्पूर्ण है। यदि पूर्ण गुरु कोई तरकीब बताए तो उस अतुलनीय सत्य-प्रभु को पाया जा सकता है। हरि-परमेश्वर एक सुंदर महल के समान है, जिसमें माणिक, मोती एवं लाल भरे हुए हैं। निर्मल मोती, हीरों के चारों ओर सोने के सुंदर किले हैं, परंतु उस किले पर सीढ़ी के बिना चढ़ा नहीं जा सकता है। उस मंदिर पर चढ़ने के लिए गुरु सीढ़ी है। गुरु ही संसार-समुद्र को पार करने हेतु नाव है। गुरु ही सरोवर है, समुद्र है, जहाज है, तीर्थ है और गुरु ही दरिया है। यदि प्रभु चाहे तो गुरु के माध्यम से मनुष्य की मलिन मति शुद्ध हो जाती है, क्योंकि व्यक्ति तब सत्संगत रूपी सरोवर में स्नान करने लग जाता है। हर कोई कहता है कि परमात्मा पूर्ण है और उसका निवास भी ऐसे सिंहासन पर है जिसमें कोई कमी नहीं है। पूर्ण प्रभु अति सुंदर, त्रुटिविहीन स्थान पर विराजमान है तथा टूटे हृदय वाले लोगों की आशाएं पूर्ण करने वाला है। श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि पूर्ण प्रभु अगर व्यक्ति को मिल जाए तो उसके गुणों में क्या कमी आ सकती है? अर्थात् कोई कमी नहीं आ सकती।

अपने हृदय रूपी मंदिर को स्वच्छ, निर्मल, पवित्र बना लेना, हर पल परिपूर्ण परमेश्वर को अपने हृदय-घर में बसा प्रतीत कर गुरु-दर्शाये मार्ग पर निरंतर चलते हुए परम ज्योति में समा जाना। श्री गुरु अमरदास जी का पावन फरमान है :

हरि मंदर महि हरि वसै सरब निरंतरि सोइ ॥

(पन्ना १३४६)

वस्तुत: श्री गुरु नानक देव जी ने हरि-नाम को ही सच्चा तीर्थ माना है :

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥
तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥

(पन्ना ६८७)

श्री गुरु नानक देव जी ने इस तथ्य को स्पष्ट किया है कि मात्र तीर्थ-स्नान से मुक्ति सम्भव नहीं है। गुरु-ज्ञान से प्राप्त नेक विचारों से जीवन का दृष्टिकोण बदलने वाले साधन का नाम ही सच्चा तीर्थ-स्थल है, जहां हृदय रूपान्तरित हो जाता है।

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

ऐतिहासिक तथ्यों से स्पष्ट होता है कि १५०१ ई. के नवंबर माह में श्री गुरु नानक देव जी के चरण-कमल श्री अमृतसर की धरती पर पड़े, जिसकी बदौलत यह धरा पावन एवं पूज्नीय हो गई। श्री गुरु रामदास जी का पावन फरमान है :

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे॥
गुरसिखीं सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा॥
गुरसिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा॥
जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा॥...
जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा॥
(पन्ना ४५०)

अर्थात् मेरा सतिगुरु जहां भी विराजमान है वह स्थान अति सुंदर, सुहावना हो जाता है। गुरु के प्यारे सिक्ख उस स्थान को प्रयत्नपूर्वक ढूंढ लेते हैं और उस (पावन) स्थान की धूलि अपने मस्तक पर लगाते हैं। ऐसे गुरसिक्खों की मेहनत सफल हो जाती है और ईश्वर स्वयं उन्हें पूज्य बना देता है। प्रभु-नाम का पुण्य फलीभूत होता है औऱ फिर उसमें कभी कोई कमी नहीं आती। हे नानक ! प्रभु का वह सेवक, जिसके हृदय में प्रभु का नाम बस जाता है, स्वयं प्रभु-रूप हो जाता है। यह वही पवित्र स्थान है, जहां श्री गुरु नानक देव जी के साथ बाबा बुड्ढा जी तथा अन्य श्रद्धालु सिक्ख भी मौजूद थे। इतिहासकारों की खोज से यह भी स्पष्ट होता है कि गुरु जी ने यहां सूखे हुए ताल को अमृतमयी जल से भरपूर कर दिया था। 'तवारीख गुरू खालसा' में ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं कि ''प्रथम पातशाह पहली उदासी आरंभ कर फतिआबाद से सुलतानविंड की जूह में एक ढाब के किनारे आ विराजमान हुए। गाँव के एक किसान के घर उत्सव था। वह गुरु जी को महापुरुष जान कर उनके लिए खीर, हलवा, रोटी आदि भोज्य पदार्थ लेकर उपस्थित हुआ। भाई मरदाना जी ने बड़े प्रेमपूर्वक भोजन ग्रहण किया और फिर बड़ी तन्मयता से रबाब बजाई। गुरु जी ने सुंदर शबद गायन किया। साथ ही प्रसन्न होकर फरमाया कि यहां भोग और मोक्ष का प्रवाह चलेगा।''

कितनी अद्भुत हकीकत है :

सा धरती भई हरीआवली
जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ॥ (पन्ना ३१०)

श्री गुरु अमरदास जी ने श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना वाले स्थान को चिन्हित किया तथा श्री गुरु रामदास जी को इसे धर्म के केंद्र के रूप में आबाद करने का आदेश दिया। गुरुआई पर विराजमान होने के उपरांत श्री गुरु रामदास जी ने यहां की पांच सौ बीघा जमीन खरीद कर सरोवर की खुदाई आरंभ करवा कर अन्य निर्माण-कार्य सम्पूर्ण करवाए। सरोवर को पक्का पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने करवाया। अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्थ यहां उल्लेखनीय है कि श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब की आधारशिला भेदभाव से कोसों दूर रहते हुए प्रसिद्ध सूफी संत फकीर साँई मियां मीर जी से रखवाई, जिससे श्री गुरु नानक देव जी के घर का पावन सिद्धांत स्वत: स्पष्ट हो गया कि सिक्ख पंथ सर्वधर्म समन्वय, भ्रातृ-भावना, प्रेम, शांति, सरबत्त के भले की कामना करने वाला एवं समूची मानवता के कल्याण का पथ है।

अकाल पुरख वाहिगुरु की अपार रहमत, संगत की असीस श्रद्धा, प्रेम एवं परिश्रम से की जाती कार-सेवा के माध्यम से निरन्तर बरसती है। गुरु-कृपा की बदौलत १६०४ ई. में अमृत सरोवर के मध्य श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण-कार्य सम्पूर्ण हुआ। इसी दौरान गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना का अद्वितीय कार्य संपन्न किया, जिसे लिखने की सेवा महान विद्वान भाई गुरदास जी के कर-कमलों से संपूर्ण हुई। सन् १६०४ ई. में ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पहला पावन प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में हुआ। श्री

गुरु अरजन देव जी ने बाबा बुड्ढा जी को पहला ग्रंथी नियुक्त किया। प्रथम प्रकाश पर आए हुकमनामे के अनुसार महान एवं आलौकिक कार्यों की संपूर्णता हेतु परमेश्वर खुद अंग-संग सहाई होते हैं :

सूही महला ५ ॥
संता के कारजि आपि खलोइआ
हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥
धरति सुहावी तालु सुहावा
विचि अंम्रित जलु छाइआ राम ॥
अंम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ
सगल मनोरथ पूरे ॥
जै जै कारु भइआ जग अंतरि
लाथे सगल विसूरे ॥. . .
जिस का कारजु तिन ही कीआ
माणसु किआ वेचारा राम ॥
भगत सोहनि हरि के गुण गावहि
सदा करहि जैकारा राम ॥
गुण गाइ गोबिंद अनद उपजे
साधसंगति संगि बनी ॥
जिनि उदमु कीआ ताल केरा
तिस की उपमा किआ गनी ॥. . .
जिसु प्रीति लागी नाम सेती
मनु तनु अंम्रित भीजै ॥
बिनवंति नानक इछ पुंनी पेखि दरसनु जीजै॥

(पन्ना ७८३)

श्री गुरु अरजन देव जी ने अत्यन्त विनम्रता से प्रभु-चरणों में विनती की है कि यह जो महान कार्य था, प्रभु ने स्वयं ही सम्पूर्ण किया है। मनुष्य बेचारा भला क्या कर सकता है! इस अमृत सरोवर में अठ्सठ तीर्थ, पुण्य क्रियाएं और समस्त निर्मल आचरण आ गए हैं। जिसे प्रभु-नाम की प्रीति लग गई है, उसका मन-तन अमृतमयी हो गया है। श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि मेरी समस्त इच्छाएं पूर्ण हो गई हैं और मैं दर्शन करके ही जीवित बना रहता हूं।

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब और अमृत-सरोवर आध्यात्मिक केंद्र होने के साथ-साथ सामाजिक एकता, भ्रातृ-भावना, समरसता, एवं विश्व-शांति स्थापित करने वाला आलौकिक अजूबा है।

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के चार दरवाजे मानवीय एकता का शंखनाद करते प्रतीत होते हैं, जहां हर जाति, हर वर्ण का इंसान, चाहे वो किसी भी दिशा से आया हो, हरि के मंदिर में प्रवेश पा सकता है। लाखों श्रद्धालुओं का बिना किसी भेदभाव के एक ही पंक्ति में बैठ कर लंगर-प्रसाद ग्रहण करना ऐसा अद्भुत दृश्य वाकई आनंदविभोर करने वाला है।

अनेक बार इस पावन स्थान एवं सरोवर की बेअदबी करने की, इसे समूल नष्ट करने की महापापियों द्वारा नाकाम कोशिशें की गईं, लेकिन हर बार उनके नापाक इरादे नष्ट होते गए। बाबा दीप सिंघ जी जैसे महान शूरवीरों ने श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति दी। हर बार सिक्खों ने इसकी आन-बान-शान को कायम रखा, चाहे उसके लिए खून की नदियां बहानी पड़ीं।

अन्त में अपने हृदयोद्गारों को इस संदर्भ में यूं अभिव्यक्त करना चाहूंगी कि जीवन-काल में विचरण करते हुए अपने कार्य-स्थल पर अथवा यात्रा के दौरान जिस किसी से भी श्री हरिमंदर साहिब की आलौकिक छटा की बात हुई, वही इसकी दिव्यता, यहां की आध्यात्मिकता से भावविभोर नज़र आया। यहां की पावनता, स्वच्छता, सेवा-भाव, अमृतमयी इलाही बाणी की धुनों के संगीतमयी-शांतमयी, आनंदमयी वातावरण के सभी जन को जीवन में एक बार नहीं, अनेक बार दीदार हों, यही सच्चे मन से अरदास है!

साका तरनतारन साहिब : 26 जनवरी, 1921 ई.

*– सिमरजीत सिंघ **

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने करतारपुर साहिब (जलंधर), श्री हरिगोबिंदपुर तथा तरनतारन साहिब शहर को आबाद एवं निर्माण करने में अहम भूमिका निभाई। सन् १५९६ ई. में गुरु साहिब ने तरनतारन साहिब की स्थापना की। इससे पूर्व इस इलाके में जंगली जानवरों तथा जंगली बेल-बूटों की भरमार थी। इलाके में पानी के कई छोटे-बड़े स्रोत थे। इस रमणीय जंगली क्षेत्र में कई तपस्वी तथा संत-महात्मा आम विचरण किया करते थे।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का उनके बड़े भ्राता प्रिथी चंद द्वारा विरोध किया जाने लगा। गुरु साहिब ने श्री अमृतसर साहिब की सेवा-संभाल कुछ प्रमुख सिक्खों को सौंप दी। गुरु साहिब जी श्री अमृतसर से चलकर बासरके, खडूर साहिब, गोइंदवाल साहिब, गुरू की वडाली आदि नगरों में सिक्खी का प्रचार करते हुए तरनतारन वाली जगह पर पहुंचे। यहां का जल-स्रोत गुरु जी को पसंद आया। इस स्रोत का जल शीशे की भांति स्वच्छ था। श्री गुरु अरजन देव जी के मन को इस रमणीय स्थान ने बहुत प्रभावित किया। बूटे शाह ने 'तवारीख-ए-पंजाब' में तरनतारन साहिब के बारे में वर्णन करते हुए लिखा है-- "इस मुलख दी पूरबी हद्द वैरोवाल, जो दरिआउ बिहार (बिआस) दे कंढे है, पच्छमी हद्द शहिर लाहौर, उत्तर दी हद्द शहिर अंम्रितसर ते इस दे दक्खण बंने शहिर कसूर है।"

यह जल-स्रोत वाली ढाब (जोहड़) पलासौर तथा गांव खानेवाल की मालकियत थी। इस ढाब की मालकियत के बारे में अक्सर दोनों गांवों में लड़ाई-झगड़ा होता रहता था। 'सूरज प्रकाश' के कर्त्ता भाई संतोख सिंघ के अनुसार :

इक तो पलासूर तहिं ग्राम ।
खानवाल दूसर को नाम ।
इन ते आदिक ग्राम जि और।
लरति परसपर रहिं तिस ठौर।।३८।।
बहु नर मरहिं परहिं संग्राम।
करते द्वैख जांहि जम धाम ।

गुरु जी ने सिक्खों को भेजकर निकटवर्ती गांव के प्रमुख आदमियों को इस ढाब पर बुलाया। गुरु जी ने गांवों का झगड़ा सदा के लिए खत्म करने हेतु उनको मुंह मांगी कीमत देने की पेशकश करके गुरु-घर का निर्माण करने संबंधी सारी योजना बताई।'सूरज प्रकाश' के अनुसार :

अगले दिन ग्रामीन हकारे।
लरन बिखे बहु दोष उचारे।
इक तौ तुमरी मिटहि लराई।
दुतीए धन लेवहु मन भाई ॥४०॥
त्रितीए गुर को कारज इहां।
चतुरथ नर प्रापति फल महां।
देहु भूमिका गुर घर को अबि ।
दरब मोल ते लिहु दुगुना लब ।।४१।।

इस प्रकार गुरु जी ने एक लाख सत्तावन

**मुख्य संपादक। फोन : ९८१४८-९८२२३*

हज़ार रुपए अदा कर यह ज़मीन खरीद ली :

दीए रजतपण लच्छ प्रकाश ।

अधिक सहंस्र सपत पंचासि ।

सरकारी पटा तरनतारन साहिब जो कि फतिआबाद के हाकिम की मौजूदगी में लिखा गया था, में लिखा है— ''सजरा नशब कसबा तरन तारन सन् १८६५ दफा अव्वल हालात आबादी— अरसा २७५ साल दा गुजरा है कि गुरु अरजन देव जी श्री अंम्रितसर से इस जगहा बतौर जंगल वैरान पड़ी हुई थी। गुरु साहिब जी वहां एक मकान फकीराना बना कर गुज़ारा करते रहे और अकवाम मुखतलिफ कसरत से उनके सेवक हो गए और उस वक्त गुरु साहिब जी ने तखमीनन एक हज़ार आठ सौ बीघा अराजी मसंमी खानाराजपूत साकन पलासौर वनीज़ दीगर देहात गरदोनवाह व तफसील ज़ैल पट्टी पलासौर थेह ब्राहमणा वाला से खरीद करी । सिरफ खाना राजपूत मुसलमान ने तखमीनन पांच सौ रुपए को दी और कौम हिंदू ने बतौर हिबा बिला लेने कीमत दे दी। गुरु साहिब जी ने अबाद करना वी गुरुद्वारा व तलाब (सरोवर) बनाना शुरू किया और चाहत अपनी लागत से तैयार करवाए और वहां एक छंभ, जिसमें पानी रहता था, जो शख्श बीमार मूज़जम की तरह आता था, वह बीमारी से आराम पाता था। उस वक्त से गुरु के नाम पर तरन तारन मशहूर किया गया, जब से बराबर आबाद है।''

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने १७ वैसाख, संवत् १६४७ विक्रमी को गांव पलासौर तथा खारा की ज़मीन पर बहुत बड़ा सरोवर तैयार करवाया। इस सरोवर के निर्माण के लिए बाबा बुड्ढा जी से अरदास करवाकर चैत्र मास की अमावस वाले दिन १६४३ विक्रमी में गुरु जी ने आपने हाथों से सरोवर का शिलान्यास किया। सरोवर की खुदाई के लिए गुरु जी ने भाई गुरदास जी से लिखवाकर पत्र भिजवाए ।

भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार इस पावन सरोवर की लम्बाई ९९९ फुट तथा चौड़ाई ९९० फुट है। इसमें कुल २० सीढ़ियां हैं। इस सरोवर में बारी दुआब शहर की शाखा में से हंसली द्वारा जल भरा जाता है। यह सेवा सरदार रघबीर सिंघ महाराजा जींद ने करवाई थी ।

अलाउद्दीन मुफ्ती 'इबरतनामा' में लिखता है कि ''तरनतारन के सरोवर के जल में बीमारियां दूर करने की शक्ति है।''

बूटे शाह अपनी पुस्तक 'तवारीख-ए-पंजाब' में भी तरनतारन साहिब के सरोवर तथा शहर के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा करता है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने तरनतारन साहिब के सरोवर को पक्का करने के लिए ईंटें पकानी शुरू कर दीं। इलाके के चौधरी नूरदीन का पुत्र अमीरुद्दीन पकी हुई ईंटों को जबरन उठा ले गया। इन ईंटों से उसने अपने गांव सराय नूरदीन में अपना घर बनवा लिया।

गुरु जी द्वारा तरनतारन साहिब की स्थापना का मुख्य उद्देश्य सिक्ख धर्म का प्रचार-प्रसार करना था। उन दिनों यह स्थान लाहौर से गोइंदवाल साहिब जाने वाले तजारती मार्ग पर स्थित था। यह सिक्ख धर्म के प्रचार के लिए उस समय की मुख्य जरूरत थी।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर के पंजाब में प्रवेश करने पर ज़ालिम सत्ता का पतन होना शुरू हो गया। सिक्खों की जद्दोजहद के परिणामस्वरूप सिक्ख मिसलें उभरकर सामने आईं। इस जद्दोजहद में मुगल हाकिमों ने सिक्खों का नामो-निशान मिटाने

में कोई कसर शेष न छोड़ी। सिक्खों ने यह जंग बड़ी दृढ़ता एवं हिम्मत के साथ लड़ी। परिणामत: सिक्ख मिसलें अस्तित्व में आईं। यही सिक्ख मिसलें बाद में महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य में तबदील हो गयीं । अन्य मिसलों के सरदारों की मदद से फैज़लपुरिया मिसल के सरदार बुद्ध सिंघ सिंघपुरिये ने नूरदीन का वह मकान ढहा दिया, जिसमें उसने गुरु साहिब जी की ईंटें चोरी कर लगाई थीं। ये ईंटें हाथों-हाथ तरनतारन साहिब लाकर सरोवर को पक्का किया गया। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने शासन-काल के समय तरनतारन साहिब की तरफ विशेष ध्यान दिया। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने कर्मचारी मोती राम की बदौलत बाकी रहता सरोवर पक्का करवाया। उन्होंने १८८५ विक्रमी में श्री दरबार साहिब का नवनिर्माण करवाया।

अंग्रेज़-काल के समय गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंधक भ्रष्ट हो गए। गुरुद्वारा साहिबान के भीतर मनमति का प्रचार ज़ोर पकड़ गया। श्रद्धालु सिक्खों के मन में निराशता फैलती जा रही थी। अमावस के मेले पर लोग दूर-दूर से आते थे। मेले में लड़ाइयां होने लगीं । बुंगों का माहौल दिन-ब-दिन पतन की ओर जा रहा था। अंग्रेजों द्वारा ईसाई मिशनरियों को उत्साहित किया जा रहा था। ईसाई मिशनरी अपना प्रचार गुरुद्वारे के अंदर तक ले आए थे। 'खालसा एडवोकेट' अख़बार में उनके एक बुंगे के मालिक द्वारा ईसाई मत धारण किए जाने की खबरें भी मिलीं। उसने बुंगे की उस दीवार पर क्रॉस के निशान भी छपवा दिए जो श्री दरबार साहिब की परिक्रमा की तरफ थी। ईसाई मिशनरियों ने श्री अमृतसर, जंडियाला, अजनाला तथा तरनतारन साहिब के सिक्खों के मुख्य केंद्रों पर अपने विशेष प्रचारक नियुक्त कर दिए ।

तरनतारन साहिब के गुरुद्वारा साहिब के प्रबंधकों ने लाहौर के कमिशनर मिस्टर किंग के साथ मेल-मिलाप बढ़ा लिया। उन्होंने सरकार की शह पर गुरमति विरोधी गतिविधियां आरंभ कर दीं।

महंतों की शह पर गुंडा अनसर आने वाली संगत को परेशान करने लगे। वे शराब पीकर सरेआम परिक्रमा में हुल्लड़बाज़ी करते, लड़ाइयां करते। यहां तक कि वेश्याएं भी नचाते। यदि उनकी गतिविधियों को कोई रोकने की कोशिश करता तो वे उसकी मार-पीट करना आरंभ कर देते। उन दिनों इलाके का थानेदार एक भला पुरुष सरदार तेजा सिंघ आ गया। लोगों की फरियाद पर उसने इनको सुधारने की कोशिश की। ज्ञानी करतार सिंघ इसके बारे में वर्णन करते हैं :

थाणेदार तेजा सिंघ इक आया,
ओह दे पास फरिआद पुचाउण बहुते ।
ओस खूब कीते सिद्धे मार लुच्चे,
लग्गे ओस तों अक्खां चुराउण बहुते।

महंतों द्वारा श्री दरबार साहिब के दर्शन के लिए आए एक निहंग सिंघ सरदार आतमा सिंघ की इसलिए मारपीट की गयी कि वह गुरबाणी के शबद पढ़ रहा था। शहर के एक सज्जन की नौजवान लड़की के साथ एक महंत द्वारा गुरुद्वारा साहिब के अंदर ही छेड़छाड़ की गयी। जब लोगों ने इसका विरोध किया तो महंतों ने अपनी गलती मानने की बजाए बड़ी बेशर्मी से कहा कि आप लोग अपनी स्त्रियों को यहां मत आने दें। हम कौन-सा किसी को बुलाने जाते हैं। सिंघ सभा के सचिव भाई संत सिंघ का बच्चा सरोवर में स्नान करने आया तो उसके गले के साथ पत्थर बांधकर सरोवर में डुबो दिया गया। कई महंत दुराचारी हो

चुके थे व केशों का भी अपमान करने लग गए थे।

२६ जनवरी, १९२१ ई. वाले दिन श्री अकाल तख़्त साहिब की दूसरी मंज़िल पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की मीटिंग हुई। एक सिंघ ने भरे दीवान में तरनतारन साहिब के सारे हालात बयान किए। ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया इसके बारे में बयान करते हैं :

तरनतारनो आउण शकाइतां जी,
एस धाम दा कुझ सुधार करीए।
सेवादार एथे करन पाप भारे,
इहनां वासते कुझ विचार करीए।
आखरकार कमेटी दीवान कीता,
सोच एस 'ते नाल विसथार करीए।

दीवान में हाज़िर सिंघों ने तरनतारन साहिब को भ्रष्ट महंतों से आज़ाद करवाने का अरदासा कर दिया। चूहड़काणा से भाई सुच्चा सिंघ चक्रवाला २२ सिंघों का जत्था लेकर श्री अमृतसर पहुंच गये।

अगले दिन सुबह सिंघों का एक जत्था तरनतारन साहिब पहुंच गया। ये सारे माथा टेककर श्री दरबार साहिब के अंदर बैठ गए। रागी सिंघ 'आसा की वार' का कीर्तन कर रहे थे। शहर में जत्थे के आने की ख़बर पहुंच गयी। शहर निवासी भी गुरुद्वारा साहिब में इकट्ठा होना आरंभ हो गए । 'आसा की वार' के भोग के उपरांत गुरुद्वारा साहिब के महंत तेजा सिंह ने संगत को संबोधन करना शुरू किया— ''बाहर से आया जत्था गुरुद्वारा साहिब पर जबरदस्ती कब्ज़ा करना चाहता है। इससे पहले गुरुद्वारा पंजा साहिब पर भी इन्होंने ऐसे ही कब्ज़ा किया है। अब ये तरनतारन साहिब पर कब्ज़ा करने आए हैं। मैं इन वीरों को बताना चाहता हूँ कि हम उदासी साधु नहीं हैं। हमें श्री अकाल तख़्त साहिब पर हुए गुरमते की ख़बर पहुंच गयी है । हमने भी पूरा प्रबंध किया हुआ है। हमारे यहां १०० घरों में १००० की संख्या में नौजवान हथियारों से लैस तैयार बैठे हैं। सिर्फ नगाड़े पर चोट लगाने की देर है, सब यहां पर पहुंच जाएंगे ।'' यह कहकर महंत बैठ गया।

स. करतार सिंघ झब्बर, जो सामने बैठे सारी वार्ता सुन रहे थे, संगत को संबोधित करने के लिए उठ खड़े हुए। उन्होंने अपने भाषण में कहना शुरू किया, ''हम आज गुरुद्वारे पर कोई नया कब्ज़ा करने नहीं आए। पंथ का कब्ज़ा उस समय ही हो गया था जब से पंथ ने श्री अकाल तख़्त साहिब का प्रबंध संभाला है। महंत जी को मालूम होना चाहिए कि श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री दरबार साहिब, गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी तथा श्री तरनतारन साहिब का सरबराह एक ही है, इसलिए पंथ का कब्ज़ा तो हो चुका है। आज तो हम गुरुद्वारा साहिब में पतितों, गुरु-निंदकों को बाहर निकालने आए हैं। हमारा गुरु के सिक्खों के साथ कोई विरोध नहीं है।''

गुरुद्वारा साहिब में अरदास करके भोग डाल दिया गया। भाई मोहन सिंघ वैद्य, भाई सुंदर सिंघ तथा भाई संत सिंघ का जत्था ढोटीआं वाले बुंगे में ठहर गया । भाई मोहन सिंघ जी ने शहर के सूझवान व्यक्तियों के साथ बातचीत की। बातचीत के दौरान संधि की शर्तें लिख ली गयीं। महंत एक तरफ तो संधि की बातें करते रहे और दूसरी तरफ उन्होंने आस-पास वाले गांवों से बदमाशों को लाने के लिए आदमी भेज दिए। इस तरह ये ख़बरें पास के गांवों में भी पहुंच गयीं। जहां एक तरफ किराए के बदमाश महंतों की सहायता के लिए आते वहीं दूसरी तरफ सारा गांव ही अकालियों के हक में आना शुरू हो गया। शाम तक ६-७ हज़ार की संख्या में संगत गुरुद्वारा साहिब में इकट्ठी हो गयी।

दीवान सज गया। रहरासि साहिब के भोग के उपरांत एक महंत ने संगत पर हथगोला फेंक दिया, जिससे भारी धमाका हुआ। संगत में भगदड़ मच गयी। बुंगों पर बैठे महंतों ने संगत पर ईंटें बरसानी शुरू कर दीं। श्री दरबार साहिब के अंदर बैठे महंतों के आदमियों ने संगत पर लाठियों, छवियों से हमला कर दिया। इस दौरान १७ सिंघ गंभीर रूप से घायल हो गए। ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया बयान करते हैं :

ओपर एसे रोले विच फड़ छवीआं,
झटा पट्ट बदमाश आ वार करदे ।
ठारां वीहां ताईं ज़खमी कर दित्ता,
शुकर शुकर करतार करदे ।
हत्थ किसे ने अग्गों न चुकना जी,
जत्थेदार इह उच्ची पुकार करदे ।
पै गिआ रोला करतार सिंघ,
लोक वेखदे ते हाहाकार करदे ।

गांव वसाऊ कोट के भाई हुकम सिंघ तथा गांव अलादीन के भाई हज़ारा सिंघ गंभीर रूप से घायल हो गए। सरदार बलवंत सिंघ की बाजू पर गहरा टक (घाव) लगा। संगत ने भी थोड़ा संभलकर मुकाबला करना शुरू कर दिया। जत्थे ने जख्मियों को अस्पताल भर्ती करवाया। रात के समय ही नगर की एक बुजुर्ग माता ने श्री दरबार साहिब की साफ-सफाई की सेवा की। अफसरों ने ज़ख्मी सिंघों को महंतों पर मुकद्दमा दायर करवाने के लिए ज़ोर डाला। सिंघों ने किसी भी महंत पर मुकद्दमा दायर करवाने से इंकार कर दिया। संगत ने महंतों को फिटकारना शुरू कर दिया। हाकिमों का रुख अपने विपरीत देखकर महंत परेशान हो गए। महंत हर तरफ से अपना सहयोग गंवा बैठे थे। अंत में हार कर महंतों ने पंथ की शरण में जाकर माफी मांगने की योजना बनायी ।

भाई हज़ारा सिंघ तथा भाई हुकम सिंघ जख़्मों की पीड़ा न झेलते हुए ४ फरवरी वाले दिन शहीदी प्राप्त कर गए। इन शहीदों की यादगारें मंजी साहिब के समीपस्थ बनवायी गयीं । गुरुद्वारा साहिब श्री दरबार साहिब, तरनतारन साहिब की सेवा-संभाल पंथक हाथों में आ गयी।

सरदार बलवंत सिंघ चक्करवाला काफी समय बाद दुरुस्त हुआ। जिन गांव वालों ने महंतों के साथ मिलकर हमला किया था उन्होंने पंथ की शरण में आकर क्षमा-याचना की । ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया लिखते हैं :

मादा पैदा कुरबानीआं फेर होया,
पंथ आण होया हुशयार वीरो ।
जिन्हां पेंडूआं आण के जुलम कीता,
लई उन्हां ने मुफत फिटकार वीरो।
पच्छो तां जे पंथ दी शरन आ गए,
गुरू दे गा भवजलों तार वीरो ।
मुँह काला जहान दे विच होसी,
नष्ट जाणगे हो परवार वीरो।
लाहनत लई पुजारीआं खट्ट भारी,
हरमंदर पंथ ने लिआ संभार वीरो।
अंत रहि गिआ सच्च करतार सिंघा!
कूड़ हो गिआ विच्चों उडार वीरो ।

स्रोत-पुस्तकें :-
१. भाई कान्ह सिंघ नाभा— महान कोश
२. स. रछपाल सिंघ— पंजाब कोश
३. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी)— सिक्ख पंथ विश्वकोश
४. स. नरैण सिंघ एम. ए., अकाली मोरचे ते झब्बर
५. स. किरपाल सिंघ चंदन, सिक्खां दी संखेप गाथा
६. ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया, अकाली लहिरां नं. १
७. डॉ. हरिंदर सिंघ, तरनतारन : इक सरवेखण

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का महत्वपूर्ण विभाग
सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड

*-डॉ. रणजीत कौर पंनवां**
*-बीबी सिमरनजीत कौर***

पंथ की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब का प्रमुख कार्य गुरुधामों की मर्यादानुसार व्यवस्था और सिक्ख धर्म का प्रचार-प्रसार करना है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु और अपने कार्यों को प्रभावशाली ढंग के साथ चलाने के लिए समय-समय पर कई नये विभाग स्थापित किये है। इसी के अंतर्गत 'सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड' संस्था का महत्वपूर्ण विभाग है, जो १९४५ ई. लेकर अब तक निरंतर कार्य कर रहा हैं।

सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड 'सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी' के नाम पर आरंभ हुआ। सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी को आरंभ करने के लिए इतिहास-प्रेमियों का मुख्य मकसद यही था कि किसी भी तरह से सिक्ख इतिहास को संभालने एवं लिखने का कार्य विधिवत ढंग से किया जाये। डॉ. गंडा सिंघ इतिहास की देखरेख से सम्बन्धित चिंतित होते हुए अति भावपूर्ण टिप्पणी करते हैं— ''इतिहास कौम की जिंद-जान होता है। जिंदा कौमें इसी कारण सबसे पहले तथा अन्य आवश्यक कर्त्तव्यों के साथ इस दिशा में ज्यादा ध्यान देती और धन ख़र्च करती हैं। सिक्ख कौम का इतिहास जितना अधिक शानदार और गौरवशाली है, उतना ही ज्यादा अधूरा, बिखरा हुआ और उलझा हुआ है। दुश्मन और सत्ताधारी कौमों ने अपने मतलब के लिए हमारी तवारीख को जानबूझ कर भी बिगाड़ा है। इतिहास को शुद्ध और सुलझी हुई सूरत में प्रकाश करना बड़ी ज़िम्मेदारी और सर्वसंपन्न जत्थेबंदी का ही काम है। यही विचार कर 'सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी' स्थापित हुई है।''[१]

इतिहास अतीत का साथी होता है, जो कौम का समय-समय पर नेतृत्व करता हुआ कौम के अंदर नई रूह भर कर आगे बढ़ने और जूझने के लिए उत्साह पैदा करता है। इतिहास के शोधकर्ताओं को सदा यह गिला रहा है कि सिक्खों ने इतिहास सृजित तो किया है, मगर लिखा व संभाला नहीं। बावा बुद्ध सिंघ ने भी अपने एक लेख के माध्यम से इतिहास की संभाल से सम्बन्धित अपनी इच्छा एवं चिंता ज़ाहिर की है— ''आवश्यक है कि या तो हम सिक्ख इतिहास सभा स्थापित करें या सिक्ख इतिहास की 'कुर्सी' खालसा कॉलेज में (या अन्य किसी केंद्रीय स्थान पर) स्थापित करें। सिक्ख इतिहास का विशेष पुस्तकालय हो, जहाँ

*, ** रिसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर, फोन : ९८१४८-५१५१३, ८५६८८-३१६६६

इतिहास से सम्बन्धित सभी पुस्तकें एकत्र की जाएं। विलायत वाली पुस्तकों की प्रतिलिपियां मंगवाई जाएं। फिर विद्वान अपनी खोज आरंभ करें।''[२]

बीसवीं सदी के प्रथम दो दशकों में जब सिंघ सभायें काफ़ी ज़ोर पर थीं, तो उस समय और ज्यादा रुचि धर्म एवं विद्या के प्रचार-प्रसार की तरफ लगी हुई थी, लेकिन फिर भी निजी तौर पर यत्न भगत लक्षमन सिंघ, प्रो. पूरन सिंघ, स. खजान सिंघ आदि प्रबुद्ध विद्वानों द्वारा अंग्रेज़ी भाषा में इतिहास-प्रचार, पुस्तकों की रचना के माध्यम से किया गया। इसी समय संस्थागत रूप से इतिहास को संभालने से सम्बन्धित एक सोसायटी गठित करने का विचार भाई निहाल सिंघ सूरी के मन में आया, जो कि किसी कारण संपूर्ण न हो सका।

स. करम सिंघ हिस्टोरियन[३], बावा बुद्ध सिंघ तथा अन्य पंथदर्दियों द्वारा सिक्ख इतिहास की पड़ताल, लेखन और ऐतिहासिक स्रोतों की संभाल का जो सपना देखा गया, उसे पूरा करने का प्रथम प्रयास इन सज्जनों द्वारा सन् १९२९ ई. में हुआ, जब ''२२ दिसंबर, १९२९ ई. को श्री अकाल तख्त साहिब पर एक आरंभिक मीटिंग की गई और 'सिक्ख इतिहास सोसायटी' गठित की गई। स. करम सिंघ को इसका सचिव नियुक्त किया गया।''[४] इस सोसायटी के सदस्यों के रूप में प्रिं. तेजा सिंघ, बावा बुद्ध सिंघ, बावा प्रेम सिंघ होती, प्रो. जोध सिंघ, बावा हरक्रिशन सिंघ, भाई तख्त सिंघ, ज्ञानी हीरा सिंघ दर्द आदि सेवा प्रदान करने के लिए नियत किये गए। फरवरी, १९३० ई. के दौरान खालसा कॉलेज ने स. करम सिंघ हिस्टोरियन को २५० रुपए महीना तनख़्वाह की पेशकश की और खालसा कॉलेज (श्री अमृतसर) में सिक्ख ऐतिहासिक खोज का विभाग आरंभ करने का विचार बनाया। सर सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया, भाई साहिब भाई वीर सिंघ, सरदार बहादुर सरदार बिशन सिंघ प्रिंसिपल और आवश्यकतानुसार अन्य सदस्य कमेटी में लेने की छूट के साथ एक कमेटी गठित की गई, ताकि बड़े सुचारू ढंग के साथ कार्य संपूर्ण किए जा सकें। हो सकता है कि शारीरिक बीमारी के कारण स. करम सिंघ यहाँ खोज-कार्य की आरंभता के लिए उपस्थित न हो सके हों, जिस कारण ऐतिहासिक खोज का यह विभाग आरंभ करने के यत्न भी ठंडे पड़ गए। १० सितंबर, १९३० ई. को मेहनती इतिहासकार स. करम सिंघ हिस्टोरियन के अकाल प्रस्थान कर जाने का इतिहास-प्रेमियों को गहरा सदमा पहुँचा। उनके अकाल प्रस्थान कर जाने को विद्वानों ने यह महसूस किया कि स. करम सिंघ का दुनिया से चले जाना हमारा बहुमूल्य ऐतिहासिक ख़ज़ाना लुट जाने के समान है।

अपने इतिहास-प्रेमी सज्जन को सच्ची श्रद्धाँजलि देने और उसके पाक-पवित्र सपने 'इतिहास की संभाल' को पुनः साकार करने के लिए ही बावा बुद्ध सिंघ के प्रयत्न से लाहौर में 'सिक्ख हिस्टोरिकल सोसायटी' की आधारशिला १९३० ई. में रखी गई। १६ अक्तूबर, १९३१ ई. में बावा बुद्ध सिंघ के देहांत के बाद लाहौर में स्थापित हिस्टोरिकल सोसायटी लगभग ख़त्म हो गई।

स. करम सिंघ के देहांत के बाद समय-

समय पर खालसा कॉलेज की कमेटी ने अपने यत्न जारी रखते हुए ८ दिसंबर, १९३० ई. में खालसा कॉलेज में 'सिक्ख हिस्ट्री रिसर्च डिपार्टमेंट' स्थापित किया और स. जगत सिंघ एम. ए. की नियुक्ति (दिसंबर १९३०-जून, १९३१) की गई। २० अक्तूबर, १९३१ ई. को इस विभाग का प्रभार डॉ. गंडा सिंघ के सुपुर्द कर दिया गया।

डॉ. गंडा सिंघ के समय खालसा कॉलेज का यह विभाग दुर्लभ, पुरातन ऐतिहासिक ग्रंथों एवं पुस्तकों का ख़ज़ाना बनता गया। यह विभाग भारत की प्रमुख इतिहास-खोज-पड़ताल संस्था के रूप में उभरा। इसीलिए पंजाब व पंजाब से बाहर वाली यूनिवर्सिटियों, रियासतों और इतिहास-खोजी संस्थायों के विद्वान दुर्लभ पुस्तकों और रचनाओं को पढ़ने व उनका लाभ लेने के लिए यहां आते थे। खालसा कॉलेज चाहे १९३० ई. से निरंतर ऐतिहासिक पुस्तकों की संभाल और ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित करने के लिए यत्नशील है, परन्तु यह एक शैक्षणिक संस्था होने के कारण सिक्ख हिस्ट्री रिसर्च विभाग इसके एक विभाग के रूप में कार्यशील रहा। इस शैक्षणिक संस्था के पास सिक्ख इतिहास के प्राचीन फारसी, गुरमुखी व अंग्रेज़ी के स्रोत प्रकाशित करने जैसे महान कार्य के लिए आर्थिक साधन नाममात्र थे, जिस कारण बड़े खोज-कार्यों के लिए खोजी विद्वान भर्ती करने भी असंभव थे। ऐसे विषम कार्यों को अकेले विद्वान द्वारा संपूर्ण करना आसान कार्य नहीं था।

सिक्ख इतिहास के प्रति रुचि पैदा करने, स्रोतों की संभाल आदि करने के लिए एक आत्मनिर्भर संस्था या सोसायटी का होना प्रबुद्ध विद्वानों के अनुसार समय की प्रमुख ज़रूरत थी। इस मकसद को अहमियत देते हुए डॉ. गंडा सिंघ तथा बावा प्रेम सिंघ होती द्वारा 'सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी' के गठन के लिए १ मार्च, १९४१ ई. को पंथ के सम्मुख तजवीज़ रखी गई। पंथ के प्रत्येक वर्ग के प्रतिनिधियों ने इस तजवीज़ की प्रशंसा की और सोसायटी के गठन के लिए विचार होनी शुरू हो गई। इसी दरमियान तकरीबन दो वर्ष के लिए डॉ. गंडा सिंघ को किसी व्यस्तता के कारण पंजाब से बाहर जाना पड़ा और सोसायटी के गठन के मुख्य सहायक स. ईशर सिंघ मझैल को जेल जाना पड़ा, अतः यह तजवीज़ भी उचित समय पर सिरे न चढ़ती हुई ठंडे बस्ते में पड़ गई।

पंथदर्दियों के निरंतर प्रयत्नों से १० फरवरी, १९४५ ई. (२९ माघ, २००१ वि.) को ख़ालसा कॉलेज, श्री अमृतसर के प्रांगण में इतिहास-प्रेमियों और पंथदर्दियों का सामूहिक जलसा हुआ, जिसकी अध्यक्षता पंजाब के अंतिम सिक्ख महाराजा, महाराजा दलीप सिंघ की बड़ी बेटी शाहज़ादी बंबा सदरलैंड द्वारा की गई। इस पंथक समागम की आरंभता की अरदास सिंघ साहिब जत्थेदार मोहन सिंघ द्वारा की गई और सरदार बहादुर भाई जोध सिंघ (प्रिं. खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर) ने समागम की कार्यवाही आरंभ करते समारोह की अध्यक्षा शाहज़ादी बंबा सदरलैंड का सभी के साथ परिचय करवाया। सिक्ख इतिहास के चिंतकों— स. तेजा सिंघ एम. ए., प्रिं. सरदार बहादुर भाई जोध सिंघ के विचारों के पश्चात् स. ईशर सिंघ

मझैल ने सभी से पुरज़ोर अपील की कि अब समय आ गया है कि सिक्ख इतिहास की संभाल और खोज-कार्यों को उच्च स्तर पर आरंभ किया जाये और एक साझा प्लेटफार्म 'सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी' के रूप में स्थापित किया जाये। स. ईशर सिंघ मझैल द्वारा रखी गई इस अनमोल तजवीज़ की प्रौढ़ता प्रिं. गंगा सिंघ द्वारा की गई। वाहिगुरु की कृपा से सर्वसम्मति से दीवान में उपस्थित पंथदर्दियों वाला और इतिहास-चिंतकों ने 'सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी' को स्थापित करने का निर्णय स्वीकार करते हुए 'सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी' की बुनियाद रख दी तथा निम्नलिखित फिहरिस्त के अनुसार इसके पदाधिकारी नामज़द किये गए :—

१. बाबा प्रेम सिंघ होती -अध्यक्ष
२. प्रो. तेजा सिंघ एम. ए. - उपाध्यक्ष
३. प्रो. गंडा सिंघ एम. ए. - सचिव

उपरोक्त तीन पदाधिकारियों के अलावा सोसायटी के नियम तैयार करने के लिए निम्नलिखित के अनुसार सदस्यों की एक सब-कमेटी बनाई गई :—

१. स. सोहन सिंघ एम. ए. (हैंड लायब्रेरियन, स. दिआल सिंघ पब्लिक लायब्रेरी)।
२. स. गुरदिआल सिंघ सलारिया, बैरिस्टर-एट-लॉ, श्री अमृतसर।
३. स. भाग सिंघ, बी. ए., एल. एल. बी., वकील, गुरदासपुर।
४. प्रो. वरिआम सिंघ, एम. ए., एल. एल. बी., श्री अमृतसर।
५. जथेदार मोहन सिंघ, प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर।
६. स. ईशर सिंघ मझैल, एम. एल. ए., श्री अमृतसर।

सदस्यों और पदाधिकारियों के चयन के पश्चात जत्थेदार मोहन सिंघ, प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ने ५०० रुपए सोसायटी के प्रारंभिक खर्चों के लिए देने का एलान किया और साथ ही सहायता के तौर पर गुरुद्वारों के सालाना बजट में से कुछ रकम अनुदान के तौर पर सोसायटी को देने की घोषणा की। उपरोक्त कार्यवाही के बाद शाहज़ादी बंबा सदरलैंड द्वारा अध्यक्षता भाषण दिया गया, जो कि बहुत ही भावनात्मक और रहस्यमयी था। इसी दिन सोसायटी के सहयोगी सदस्यों की सूची बनाई गई, जिनकी संख्या ७० तक पहुँच गई।

सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी के स्थापित होने की अहम प्राप्ति ने जहाँ पंथ-प्रेमियों के अंदर इसके प्रचार-प्रसार के लिए उमंग पैदा की वहीं कई सज्जनों के मन में कुछ भ्रम भी उत्पन्न हो गए, जिसके लिए सोसायटी के कार्य-क्षेत्र, उद्देश्य, कार्य-शैली और नियमावली से संबंधित प्रथम पत्र प्रकाशित किया गया, जिसके माध्यम से सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी के गठन के बारे जिज्ञासु और पाठक सज्जनों में जो संदेह एवं गलतफ़हमियां पैदा हुई थीं, उनका निवारण करने का यत्न किया गया। वे पूर्णत: ख़त्म तो न हुईं, लेकिन कुछ हद तक सोसायटी के गठन होने के उद्देश्य का प्रचार-प्रसार अवश्य हुआ, जिस कारण बहुत जल्दी सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी के सदस्यों में विस्तार होने लगा और यह अपनी स्थापि के मूलभूत पड़ाव की तरफ अग्रसर हुई।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी की सहायता करने संबंधी १० मार्च, १९४५ ई. को सामान्य सभा आयोजित की, जो कि स. तेजा सिंघ समुंदरी हाल में प्रधान जत्थेदार मोहण सिंघ की अध्यक्षता में हुई, जिसमें सिक्ख इतिहास के संरक्षण के लिए गहनता से विचार की गई। इस सभा के भाग तीसरा, सिक्ख इतिहास के अधीन इन प्रस्तावों पर विचार-चर्चा की गई :—

अ) सिक्ख इतिहास की खोज के लिए बड़े पैमाने पर रेफ्रेंस लायब्रेरी स्थापित करना।

आ) सिक्ख हिस्ट्री की रिसर्च का योग्य प्रबंध करना और इसी सिलसिले में नई पुस्तकें प्रकाशित करने का प्रबंध करना।[५]

खालसा कॉलेज में सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी की स्थापि के बाद शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सहयोग करते हुए और सिक्ख इतिहास के रखरखाव के लिए उत्साह दिखाते हुए २० अप्रैल, १९४५ ई. (८ वैसाख, २००२ वि.) को हुई सभा में सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी को अपना लिया और इसके बोर्ड ऑफ कंट्रोल को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ने सिक्ख इतिहास की खोज-पड़ताल करने के लिए सलाहकार कमेटी के तौर पर नियुक्त कर लिया। सदस्यों ने इस निर्णय का स्वागत करते हुए सहर्ष सलाहकार कमेटी का सदस्य बनना स्वीकार कर लिया। इसके अलावा निम्नलिखित प्रस्ताव भी पेश किए गए :—

१. सेंट्रल सिक्ख लायब्रेरी, जिसके खोलने का निर्णय कार्यकारिणी कमेटी के प्रस्ताव संख्या ४९० तारीख़ २०-४-४५ के माध्यम से हो चुका है, के लिए पुस्तकें सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी श्री अमृतसर के माध्यम से खरीदी जाया करेंगी और उसके सचिव को एक समय पर (१०००) एक हज़ार रुपए केवल तक की पुस्तकें खरीदने का अधिकार प्राप्त होगा।

२. उक्त लायब्रेरी के लिए लायब्रेरियन की नियुक्ति सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी की सिफ़ारिश पर की जायेगी।

३. लाइब्रेरी के लिए खरीदी पुस्तकों (मसौदे) की नकल करवाई तथा इस सम्बन्ध में अन्य स्थानों पर जाने-आने का ख़र्च करने का भी उक्त सोसायटी के सचिव को अधिकार प्राप्त होगा।

४. शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की मुलाज़िमत में हिस्ट्री की खोज पर लगे आदमी भी उक्त सोसायटी की निगरानी एवं हिदायतों के अनुसार कार्य करेंगे।

५. सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी श्री अमृतसर के कार्यालय संबंधी व्यय के लिए (१००) एक सौ रुपया मासिक पाँच वर्ष के लिए उक्त सोसायटी को अनुदान दिया जायेगा। यह राशि प्रत्येक माह अदा की जाया करेगी।

६. गवर्नमेंट रिकार्ड्स में से सिक्ख इतिहास से सम्बन्धित आवश्यक भाग प्रकाशित करवाने के लिए आवश्यक ख़र्च उक्त सोसायटी के द्वारा किया जायेगा। प्रकाशित होने वाली पुस्तक और प्रकाशक की जगह सोसायटी का नाम होगा, मगर वह मालकियत सेंट्रल सिक्ख लायब्रेरी की होगी।[६]

इस प्रकार उपरोक्त प्रस्तावों को सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी ने स्वीकृति की आशा पर

लगभग अपने मनोरथ और कार्य-क्षेत्र की रूप-रेखा को प्राथमिक रूप से वर्णित कर लिया, जिससे प्राथमिक खोज-कार्य करने के लिए सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी को श्री गुरु रामदास सराय में एक हाल देना नियत कर दिया गया।

सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी की कार्यकारिणी कमेटी (बोर्ड ऑफ कंट्रोल) की नियुक्ति : सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी की नियमावली और कार्यकारिणी कमेटी बनाने के लिए पहली सभा २९ अप्रैल, १९४५ ई. (१७ वैसाख, २००२ वि.) को प्रात:काल लगभग १० बजे स. तेजा सिंघ समुंदरी हाल में की गई, जिसमें सब-कमेटी द्वारा तैयार की गई नियमावली की पांडुलिपि को सहमति कुछ संशोधन करने के बाद स्वीकार कर लिया गया।

अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सचिव तीन पदाधिकारियों के अलावा 'बोर्ड ऑफ कंट्रोल' के दस सदस्यों का चयन किया गया, जो निम्नलिखित हैं :—

१. स. गुरमुख निहाल सिंघ, एम. एस. सी., दिल्ली।
२. स. भाग सिंघ, बी. ए., एल, एल. बी., एडवोकेट, गुरदासपुर।
३. स. सोहन सिंघ, एम. ए., लाहौर।
४. जत्थेदार मोहन सिंघ, श्री अमृतसर।
५. स. ईशर सिंघ मझैल, श्री अमृतसर।
६. ज्ञानी करतार सिंघ, एम. एल. ए.।
७. ज्ञानी प्रताप सिंघ, उप जत्थेदार, श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर।
८. सरदार माहणा सिंघ, एम. ए., श्री अमृतसर।
९. स. गुरदिआल सिंघ सलारिया, बैरिस्टर-एट-लॉ, श्री अमृतसर।
१०. सरदार सरमुख सिंघ 'अमोल', श्री अमृतसर।

इस सभा के दौरान एक अति बहुमूल्य ऐतिहासिक विचार विनती के रूप में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारियों के सम्मुख यह रखा गया कि सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी के अंतर्गत एक सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी बनाई जाये, जिसके लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी प्राथमिक व्यय के लिए ५१,००० रुपए की एकमुश्त राशि दे, ताकि लायब्रेरी की आरंभता की जा सके। फिर वार्षिक अनुदान १०,००० रुपए दे। लायब्रेरी की इमारत के लिए उचित स्थान हेतु श्री दरबार साहिब कमेटी को यह भी विनती की गई कि वह अपनी प्रकाशित हुई योजना के मुताबिक यदि संभव हो सके तो श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के घंटा घर वाली दिशा में द्वार के दोनों तरफ़ बुंगे इस ढंग से बनाए जाएँ कि उनकी एक तरफ़ 'सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी' और दूसरी तरफ उससे सम्बन्धित 'सिक्ख अजायब घर' (संग्रहालय) स्थापित किए जाएँ, ताकि दर्शन करने आई संगत पर सिक्ख इतिहास, सिक्ख साहित्य और सिक्ख सभ्याचार का प्रभाव पड़े और सिक्खी का प्रचार-प्रसार शीघ्र व सरल होता रहे। अंत में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की छ: वर्षीय योजना में रखे सिक्ख इतिहास से सम्बन्धित कार्यों की प्रशंसा करते हुए सभा सम्पन्न हो गई।

सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी के बोर्ड ऑफ कंट्रोल की पहली सभा : सोसायटी के नियम, कार्य-साधक समिति (बोर्ड ऑफ कंट्रोल) की

नियुक्ति के पश्चात् सोसायटी ने अपने खोज-कार्यों की रूप-रेखा बनाने के लिए पहली सभा बोर्ड ऑफ कंट्रोल की रहनुमाई में २० मई, १९४५ ई. (७ ज्येष्ठ, २००२ वि.) को बुलाई, जिसमें निम्नलिखित प्रस्तावों पर विचार-चर्चा हुई :—

१. सबसे पहले सोसायटी द्वारा सिक्खों का समूचा इतिहास— श्री गुरु नानक देव जी से लेकर आज तक लिखा जाये।

२. विधिवत ढंग से पंथक डायरी तैयार करना।

३. सिक्ख साहित्य को लिखना, संभालना और प्रसारित करना।

उपरोक्त प्रस्ताव पारित होने पर सिक्ख इतिहास लिखने के कार्य के लिए बोर्ड ने प्रो. तेजा सिंघ और प्रो. गंडा सिंघ को नियत किया। इन विद्वानों द्वारा किये जाने वाले खोज-कार्यों की खोज-पड़ताल के लिए बाबा प्रेम सिंघ, प्रो. गुरमुख निहाल सिंघ और बावा हरक्रिशन सिंघ को ज़िम्मेदारी सौंपी गई। इसके अनुसार इतिहास की पहली जिल्द (श्री गुरु नानक देव जी से लेकर १७६४ ई. तक) जल्द ही मुकम्मल कर ली गई। उपरोक्त खोज-कार्यों को सम्पूर्ण करने के लिए सोसायटी के विद्वानों के लिए इस समय के दौरान कागज़ की कमी होने के कारण खोज-कार्यों के प्रकाशन की समस्या बनी रही।

सोसायटी की सालाना रिपोर्ट जो कि ५ मई, १९४६ ई. को डॉ. गंडा सिंघ ने पढ़ी, में ज़िक्र है कि सेंट्रल सिक्ख लायब्रेरी में बड़ी संख्या में पुस्तकें ख़रीद कर रखी जा चुकी हैं तथा अन्य पुस्तकें महीने के अंदर-अंदर आनी आरंभ हो जाएंगी, जिनके रखरखाव के लिए श्री गुरु रामदास निवास का एक हाल दे दिया जाये।[७] पुस्तकों की बहुतायत हो जाने पर केंद्रीय सिक्ख लायब्रेरी की ज़रूरत महसूस की गई, जहाँ सिक्ख साहित्य सामग्री को संभाल कर रखा जा सके और सुविधा के अनुसार इस्तेमाल किया जा सके। लायब्रेरी की पाठ्य- सामग्री का सम्बन्ध सिक्ख इतिहास, धर्म, समाज के साथ हो। कुछ समय पहले 'बोर्ड ऑफ कंट्रोल' ने १२ जनवरी, १९४६ ई. की सभा में 'सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी' खोलने का फ़ैसला किया था। उसी फ़ैसले के अनुसार ९ फरवरी, १८४७ ई. (२७ माघ, संवत् २००३ वि.) को 'सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी' की उद्घाटनी रस्म अदा की गई। इस बाबत डॉ. गंडा सिंघ सोसायटी की दूसरी सालाना रिपोर्ट में लायब्रेरी की पृष्टभूमि के बारे में विस्तार सहित बताते हैं।

'सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी' के गठित हो जाने पर सोसायटी मैंबर, बोर्ड ऑफ कंट्रोल के मैंबर, सोसायटी के अधीन कार्य कर रहे विद्वानों तथा अन्य गणमान्य पंथदर्दियों ने ज़रूरी पुस्तकें और अन्य पाठ्य-सामग्री इकट्ठी करने के लिए कमर कस ली तथा एक से बढ़ कर एक योगदान देने लगे। दुर्भाग्यवश १९४७ ई. में देश-विभाजन के समय इस अति आवश्यक कार्य में कई अवरोध और रुकावटें तो अवश्य उत्पन्न हुईं, मगर मेहनती विद्वान सोसायटी की स्थापि के उद्देश्य को मुख्य रखते हुए खोज-कार्यों और लायब्रेरी की प्रफुल्लता के कार्य को जारी रखने के लिए निरंतर यत्नशील रहे। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण लायब्रेरी में संग्रहित पाठ्य-सामग्री और अन्य कीमती रिकार्ड आदि थे। इस लायब्रेरी में केवल यहाँ बैठ

कर ही पुस्तकें पढ़ी और रेफ्रेंस (संदर्भ) के लिए इस्तेमाल की जा सकती हैं। किसी भी हालत में पुस्तकें लायब्रेरी से बाहर नहीं भेजी जाएंगी। श्री गुरु रामदास निवास के हाल नंबर ४ में लायब्रेरी को निम्न अनुसार भागों में गठित किया गया :—

१. लिखित पुस्तकें, रिकार्ड, हुक्मनामे, पटे, सनद आदि।

२. प्राचीन तस्वीरें

३. प्रकाशित पुस्तकें

४. प्राचीन सिक्ख यादगारें, जिनमें प्राचीन सिंघों की वर्दियाँ, वस्त्र, हथियार आदि शामिल थे।

इस प्रकार सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी का विकास बड़े उत्साह से होने लगा और बहुत सौहार्दपूर्णता से स्रोत सामग्री इकट्ठी होनी शुरू हो गई। रिसर्च स्कालर स. रणधीर सिंघ सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी के अंतर्गत चल रही 'सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी' की स्थापित्के सम्बंध लिखते हैं कि ''इस सोसायटी ने सबसे पहले शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रमुख अधिकारियों को प्रेरित कर, 'सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी' अप्रैल १९४६ ई. में स्थापित करवाई, जिसकी सम्पूर्णता व संभाल की ज़िम्मेदारी भी सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी को सौंपी गई।''[८] लेकिन प्रो. प्रकाश सिंघ[९] और स. सरमुख सिंघ अमोल[१०] के अनुसार 'सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी' १९५० ई. में बनाई गई। इन विद्वानों के अनुसार १९५० ई. में सेंट्रल सिक्ख लायब्रेरी का नाम बदल कर सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी रख दिया गया, जबकि डॉ. गंडा सिंघ सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी के खुलने की रस्म के समय फरवरी, १९४७ ई. में सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी की दूसरी सालाना रिपोर्ट पढ़ते हैं। इससे यह अंदाज़ा लगता है कि सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी ९ फरवरी, १९४७ ई. को खोली गई। यह भी हो सकता है कि लाइब्रेरी खोलने की रस्म १९४७ ई. को हो गई हो, परन्तु १९४७ ई. में देश-विभाजन होने के कारण सभी क्षेत्र और कार्य प्रभावित हुए। परिणामस्वरूप सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी की स्थाप्ति इस प्रभाव से अछूती नहीं रही होगी और लायब्रेरी के समूचे कार्य १९५० ई. तक पहुँच गए हों, क्योंकि लगभग ४ मार्च से १७ अगस्त तक सभी शहरों में हालदुहाई मच गई थी और हर प्रकार के कारोबार तकरीबन ठप हो गए थे। ख़ास कर श्री अमृतसर शहर के सभी रास्ते बंद हो गए थे और अप्राकृतिक माहौल होने के कारण यातायात नाममात्र ही था। सबसे बड़ी समस्या शरणार्थियों को ठहराने की थी, जिस कारण जगह की कमी ने श्री दरबार साहिब कमेटी और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को इस कद्र लाचार कर दिया था कि उन्होंने सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी के कार्यालय वाला कमरा शरणार्थियों को ठहराने के लिए कुछ समय के लिए सोसायटी से ले लिया था। इस अनहोनी के वक्त कुछ समय के लिए सोसायटी का कार्यालय और पुस्तकालय बंद रहे, जिस कारण खोज-कार्य निश्चित लक्ष्य-सीमा पर संपूर्ण न हो सके। यहाँ तक कि सोसायटी के बोर्ड ऑफ कंट्रोल के सदस्य इतने बेबस हो गए थे कि वे निजी समस्याओं के कारण मार्च, १९४८ ई. तक भी सोसायटी की कोई ख़बर-सार न ले सके। प्रधान साहिब बाबा प्रेम सिंघ होती भी सोसायटी को छोड़ने के लिए बेबस हो गए थे और सरदार सोहन सिंघ को सरदार दिआल सिंघ कॉलेज,

लाहौर से आना पड़ा था। कार्यालय को अभी तक उनका पता नहीं मिल सका,[११] जो कि बहुत ही दुखदायी था। इसके अलावा मुंशी फ़ैज़ुल हक, जो उर्दू-फ़ारसी के अच्छे विद्वान-लिखारी थे, के द्वारा फ़ारसी की दुर्लभ पुस्तकों की प्रतिलिपियां करवाने का कार्य आरंभ किया गया। उन्होंने कुछ समय में ही गुरु नानक जंत्री की चार जिल्दें (१४६९ से १६५० ई.) तैयार कर ली थीं, परन्तु अगस्त, १९४७ ई. की त्रासदी के कारण उन्हें भी अपने गाँव जाना पड़ गया था, जिस कारण यह कार्य भी अधूरा ही रह गया। चढ़दी कला वाली बात यह थी कि इतने दर्दनाक मंजर के दौरान भी संघर्षशील विद्वान कौम की इस लायब्रेरी के लिए पुस्तकें इकट्ठा करने के विषम कार्य के लिए गाहे-बगाहे यत्नशील रहे। ९ फरवरी, १९४७ ई. से १४ मार्च, १९४८ ई. तक पुस्तकों की संख्या ५९२ तक पहुँच गई थी। खुशकिस्मती की बात यह थी कि इस लायब्रेरी को सबसे दुर्लभ पुस्तकों का सामूहिक रूप से ख़ज़ाना महान् इतिहासकार दीवान बहादुर प्रोफ़ेसर सी. एस. श्री निवासाचार्य, एम. ए., अन्नामलायी यूनिवर्सिटी से मिला।

दूसरी सालाना रिपोर्ट के अनुसार फरवरी १९४७ ई. से पहले सोसायटी की रहनुमाई तले शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से नियुक्त किये गए दो खोजी विद्वान— स. रणधीर सिंघ और स. शमशेर सिंघ अशोक कार्यरत थे। इस समय के दौरान स. रणधीर सिंघ श्री दसम ग्रंथ के सम्बन्ध में दसम पिता तथा श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की समकालीन परिस्थितियों के बारे में खोज कर रहे थे और स. शमशेर सिंघ अशोक लंबे समय से पंजाब सरकार के रिकार्ड्स की जाँच-पड़ताल विभिन्न लायब्रेरियों में जाकर कर रहे थे।[१२]

सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी का खोज-कार्य प्रमुख रूप से डॉ. गंडा सिंघ, स. रणधीर सिंघ (रिसर्च स्कालर), स. शमशेर सिंघ अशोक और मुंशी फैज़ुल हक (उर्दू-फ़ारसी के विद्वान) के प्रयत्न व मेहनत से ही चल रहा था। बोर्ड ऑफ कंट्रोल की रहनुमायी में सोसायटी के विद्वानों द्वारा ऐतिहासिक खोज के दायरे को और भी प्रफुल्लित करने के लिए त्रैमासिक पत्रिका आरंभ करने का फ़ैसला लिया गया, जिसका नाम 'ऐतिहासिक पत्र' रखा गया। इस त्रैमासिक पत्रिका का उद्देश्य सिक्ख तवारीख के प्राथमिक स्रोतों को प्रकाशित कर पाठकों एवं इतिहास-लेखकों के लिए पुख़ता जानकारी उपलब्ध कराना था। 'ऐतिहासिक पत्र' की सैंची-१ (पहली), अंक-१ (वैसाख-ज्येष्ठ-आषाढ़) ४८१, संवत् ना. २००६ वि. १९४९ ई. को सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी श्री अमृतसर द्वारा प्रकाशित हुई। इसके प्रथम संपादक स. सरमुख सिंघ अमोल थे। सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी के 'ऐतिहासिक पत्र' में समय-समय पर छपी ऐतिहासिक सामग्री को बाद में पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया।

सिक्ख इतिहास और साहित्य के पाठकों एवं विद्वानों में इतिहास के प्रति रुचि और बढ़ाने तथा सोसायटी के प्रसार के लिए १९४७ ई. में सम्मानित सदस्यों ने एक लेक्चर लड़ी शुरू करने का फ़ैसला किया, जिसमें यह विचारा किया गया कि यह लेक्चर पंद्रह दिन के अंतराल के बाद हुआ करेंगे। यदि शुरूआती दौर में पंद्रह दिन

बाद लेक्चर करवाना संभव न हो सका तो कम से कम महीने में एक लेक्चर तो लाज़िमी करवाया जायेगा। लेक्चर लिखे होंगे, जो पढ़ने के पश्चात् विचार-विमर्श के लिए विद्वानों के सम्मुख पेश किये जाया करेंगे, जो वर्ष के अंत में पुस्तक के रूप में प्रकाशित किये जाएंगे, जिससे सोसायटी की खोज-प्रक्रिया और खोज-भंडार दिन-ब-दिन और अमीर होते जाएंगे तथा भविष्य में ये इतिहास-खोजार्थियों के लिए लाभदायक साबित होंगे। रिसर्च स्कालर स. रणधीर सिंघ इस लेक्चर लड़ी के लिए अति भावपूर्ण शब्द 'कमरा लेक्चर की प्रथा' इस्तेमाल करते हुए लिखते हैं कि ऐसे तैयार हुए लेक्चर प्राचीन, अप्रकाशित लेख के अलावा बाहर से आए ऐतिहासिक प्रश्नों के उत्तर इस पत्रिका में प्रकाशित करने आरंभ किए और उन्हें साथ ही साथ पुस्तक रूप देना भी शुरू कर दिया।[१३]

१९४७ ई. की उथल-पुथल के कारण इस लेक्चर लड़ी का आग़ाज़ निश्चित समय के अनुसार संभव न हो सका। उपरांत १९४८ ई. को इस तजवीज़ को अमली जामा पहनाते हुए लेक्चर-लड़ी शुरू की गई। 'गुरुद्वारा गजट'[१४] मैगज़ीन में से मिलते हवाले के अनुसार १८ जुलाई, १९४८ ई. तक आठ लेक्चर हुए थे।

लायब्रेरी कार्य लगभग १९५८ ई. तक श्री गुरु रामदास निवास में ही चलता रहा। उपरांत लायब्रेरी को श्री दरबार साहिब, श्री हरिमंदर साहिब की आटा मंडी वाली दिशा घंटा घर की विपरीत दिशा लायब्रेरी में तबदील कर दिया गया। इस लायब्रेरी वाली इमारत का नाम 'महाकवि संतोख सिंघ जी हाल' रख दिया गया। इससे पहले 'गुरु रामदास लायब्रेरी' भी लगभग सन् १९२९ ई. से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंध अधीन चल रही थी।

सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी के विद्वानों ने अपने मंतव्य की पूर्ति हेतु मार्च १९४८ ई. तक 'माखिज़ि तवारीखि-सिक्ख' (फ़ारसी) की पहली जिल्द तैयार कर ली थी। जो कागज़ की किल्लत ख़त्म होने के बाद प्रकाशित की गई। रिसर्च स्कालर स. रणधीर सिंघ ने इसी समय के दौरान श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सूची बड़ी बहुत लगन के साथ तैयार करनी शुरू कर दी थी।

सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी ने छः-सात वर्षों के दरमियान कई पुस्तकें प्रकाशित कीं, जिनमें 'माख़िज़ि तवारीख़ि-सिक्खां' (फ़ारसी), 'औराकि प्रीशान-तवारीख़ि पंजाब' (फ़ारसी), 'मुख़तिसर नानक शाही जंतरी' (उर्दू), 'सिक्ख ऐतिहासिक यादगारां', 'गुरप्रणालियां', 'वार अमृतसर की', 'शाहनामा-ए-रणजीत सिंघ', 'तवारीख अमृतसर' (उर्दू-फ़ारसी), 'प्रेम सुमार्ग ग्रंथ', 'सूची-पत्र' (दो भाग), 'अफगानिस्तान विच एक महीना' आदि हैं।

डॉ. गंडा सिंघ द्वारा पटियाला आरकाइव, महकमा पंजाबी (भाषा विभाग) और खालसा कॉलेज (पटियाला) का कार्य-भार संभालने के कारण सिक्ख-हिस्ट्री सोसायटी का कार्य संकुचित होता गया। इसी समय के दौरान यह बात भी उठ रही थी कि 'सिक्ख-हिस्ट्री सोसायटी का कार्य समूचे तौर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को अपने प्रबंध तले ले आना चाहिए। सिक्ख इतिहास को संभालने की प्रमुख ज़रूरत को पूरा करने के लिए शिरोमणि

गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा विशेष ध्यान देकर फिर से यत्न आरंभ किये गए। प्रो. प्रकाश सिंघ के अनुसार १९६३ ई. में सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी का नाम बदल कर मौजूदा नाम 'सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड' रखा गया। जिसका पहला समारोह 'सिक्ख इतिहास सम्मेलन' के नाम पर २८ मार्च, १९६४ ई. को श्री अमृतसर की धरती पर अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति मिस्टर बदरुद्दीन तयुब्ब की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें डॉ. गंडा सिंघ को सिरोपाउ और एक हज़ार रुपए देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पंजाब भर से विद्वानों ने शमूलियत की। उस समय सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड के सदस्य-प्रधान संत चंनण सिंघ (शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर), डॉ. हरबंत सिंघ, प्रो. सतिबीर सिंघ, स. जसबीर सिंघ, जत्थेदार जीवन सिंघ उमरानंगल थे। उस समय बोर्ड के इंचार्ज स. शमशेर सिंघ अशोक थे, जो कि सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी' के लाइब्रेरियन भी थे।[१५]

सम्मेलन करवाने की शृंखला को आगे बढ़ाते हुए दूसरा सिक्ख इतिहास सम्मेलन २९ जनवरी, १९६६ ई. को श्री अमृतसर में प्रो. गुरमुख निहाल सिंघ की अध्यक्षता में हुआ। इस सम्मेलन में डॉ. हरी राम गुप्ता को अभिनंदन-पत्र, सिरोपाउ और एक हज़ार रुपए देकर सम्मानित किया गया।

सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी द्वारा १९५० ई. में प्रकाशित पुस्तक-सूची के अनुसार लायब्रेरी में २३३५ पंजाबी पुस्तकों, १५४८ अंग्रेज़ी पुस्तकों के अलावा आसामी, हिंदी, उर्दू, फ़ारसी, सिंधी, बंगाली पुस्तकें उपलब्ध थीं। 'साडा लिखित पंजाबी साहित' के अनुसार १९६८ ई. में यहाँ पर ३८२ हस्तलिखतें मौजूद थीं।[१६] इसके अलावा गुरु साहिबान द्वारा जारी किए हुकमनामे, ४०० श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हस्तलिखित बीड़ें भी शामिल थीं। सिक्ख इतिहास से सम्बन्धित बड़ी मात्रा में जमा दुर्लभ ख़ज़ाना और ऐतिहासिक रिकार्ड्स को केंद्र सरकार द्वारा जून १९८४ ई. के ख़ूनी साके के समय इस लायब्रेरी में से खुर्द-बुर्द कर दिया गया। इस तबाही के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का बहुत-सा रिकार्ड जल कर राख हो गया। चाहे कि सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी का पुनर्गठन किया गया है, लेकिन जो दुर्लभ ख़ज़ाना नष्ट हो गया था, उसकी भरपायी कभी नहीं हो सकती।

अब फिर से लायब्रेरी के पुनर्गठन के अंतर्गत निरंतर इश्तिहारों के माध्यम से सामाजिक संस्थायों, अकादमिक संस्थायों और व्यक्ति विशेष के सहयोग से पुस्तकें और पांडुलिपियां एकत्रित की गईं तथा निरंतर की जा रही हैं। बहुत-से विद्वानों द्वारा अपनी निजी लायब्रेरी सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी को भेंट की गई है। वर्तमान समय में लायब्रेरी में २५,५०० से अधिक पुस्तकें (पंजाबी, अंग्रेज़ी, उर्दू, फ़ारसी, हिंदी, गुजराती, तेलगू आदि) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के स्वरूप तथा अन्य हस्तलिखित पोथियाँ मौजूद हैं। लंबे समय से मौजूद नाना प्रकार की प्राचीन अखबारें यहाँ सभ्यक ढंग के साथ आप्टीमाइज़र में संभाल कर रखी हैं। इस लायब्रेरी में फ़ोटो एलबम भी मौजूद हैं, जो कि धर्म-युद्ध मोर्चों, अकाली मोर्चों और शताब्दियों से सम्बन्धित हैं। लायब्रेरी में सिक्ख इतिहास

और साहित्य से सम्बन्धित विभिन्न पत्रिकाएं भी उपलब्ध हैं। इस अनमोल खजाने की संभाल, ट्रीटमेंट और प्रिजर्व करने के लिए फ्यूमीगेशन चेंबर का प्रयोग किया जाता है। इस खजाने का डिज़िटाईजेशन कार्य भी लगातार चल रहा है।

सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड का कार्य शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा नियत किए बोर्ड के सदस्यों के नेतृत्व में चलता है। इस समय (२०२० ई.) बोर्ड के सदस्यों के रूप में प्रिं. प्रभजोत कौर, डॉ. बलवंत सिंघ (ढिल्लों), डॉ. परमवीर सिंघ, स. हरविंदर सिंघ खालसा सेवा निभा रहे हैं। बोर्ड में अब आठ रिसर्च स्कालर विभिन्न प्रकार के खोज-कार्यों पर मेहनत कर रहे हैं। सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड में चार खोज कार्यशालाए लग चुकी हैं और लेक्चर लड़ी भी शुरू की गई है, जिसके अंतर्गत तीन लेक्चर हो चुके हैं। वाहिगुरु के समक्ष अरदास है कि यह विभाग दिन दोगुनी रात चौगनी तरक्की करे!

संदर्भिका :-

१. सरमुख सिंघ अमोल (संपा.), ऐतिहासिक पत्रा, अंक-४ सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी, श्री अमृतसर, १९५०, भूमिका।

२. बावा बुद्ध सिंघ, सिक्ख इतिहास दी खोज, करम सिंघ हिस्टोरियन (संपा.), बहुमुल्ले ऐतिहासिक लेख, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, १९९१, पृष्ठ ८०.

३. आप जी संस्थागत रूप से खोज करने के लिए अक्सर ही भाई वीर सिंघ के साथ बातचीत करते रहते थे। इस बारे में विवरण ज्ञानी महां सिंघ रचित पुस्तक 'गुरमुख जीवन' में मिलते हैं।

४. हीरा सिंघ दर्द (संपा.), करम सिंघ हिस्टोरियन दी ऐतिहासिक खोज, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, श्री अमृतसर, १९७५, पृष्ठ २०

५. गुरुद्वारा गज़ट, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, मार्च-अप्रैल, १९४५, पृष्ठ ७.

६. उक्त, जून १९४६, पृष्ठ ८

७. डॉ. गंडा सिंघ, सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी की पहली सालाना रिपोर्ट, सरमुख सिंघ अमोल (संपा.), ऐतिहासिक पत्रा, अंक-१. सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी, श्री अमृतसर, १९४९, पृष्ठ १३.

८. रणधीर सिंघ (संपा.), सिक्ख इतिहास दे प्रतक्ख दर्शन अर्थात् ऐतिहासिक सोमे, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, १९४७, पृष्ठ घ.

९. प्रकाश सिंघ (प्रो.), (संपा.), पहला सिक्ख इतिहास सम्मेलन, गुरमति प्रकाश, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, मई, १९६४. पृष्ठ ६.

१०. शमशेर सिंघ, अशोक, 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी दा पंजाह साला इतिहास' के शुरूआत में सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड के इंचार्ज एस. एस. अमोल लायब्रेरी की स्थापना १९५० ई. में हुई लिखते हैं।

११. एतिहासिक पत्र, अंक-१, सैंची-१ सिक्ख हिस्ट्री सोसायटी, श्री अमृतसर, १९४९, पृष्ठ ३१

१२. उक्त, पृष्ठ २६.

१३. रणधीर सिंघ, उक्त, पृष्ठ घ, ङ।

१४. गुरुद्वारा गज़ट, अगस्त, १९४८. पृष्ठ ५३.

१५. प्रकाश सिंघ (प्रो.), उक्त, पृष्ठ ६.

१६. शमशेर सिंघ अशोक, साडा हत्थलिखित पंजाबी साहित, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, श्री अमृतसर, १९६८, भूमिका।

चाबियों के मोर्चे की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

*–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सन् १९२० ई. से लेकर सन् १९२५ ई. तक का समय अकाली जत्थों अर्थात् सिक्खों के संयम, दृढ़ता, आस्था, बहादुरी, कुर्बानी और संघर्ष का समय रहा है। इस समय के दौरान कुछ शहीदी साकों तथा मोर्चों का इतिहास रचा गया। इनमें साका श्री ननकाणा साहिब (सन् १९२१), चाबियों का मोर्चा (सन् १९२१), गुरु का बाग का मोर्चा (सन् १९२२) और जैतो का मोर्चा (सन् १९२३) आदि शामिल हैं। प्रसिद्ध सिक्ख विद्वान, लेखक और इतिहासकार व स्वतंत्रता-सेनानी सरदार सोहण सिंघ जोश के कथनानुसार, ''गुरुद्वारा साहिब की स्वतंत्रता का अकाली संग्राम बहुत महान् व विशाल था। यह कुछ पक्षों से कांग्रेस पार्टी के स्वतंत्रता संग्राम को भी मात दे गया था।'' स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने में कोई भी राजनीतिक या धार्मिक दल अकालियों (सिक्खों) की कुर्बानियों का मुकाबला नहीं कर सकता।

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर अर्थात् अकाली लहर का एक महत्वपूर्ण मोर्चा रहा है— चाबियों का मोर्चा। अक्तूबर, १९२० ई. में श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर का प्रबंध नई चुनी हुई कमेटी के पास आ गया था। श्री दरबार साहिब के तोशाखाना की चाबियां सरकार द्वारा नियुक्त किए गए पुराने प्रबंधक सरदार सुंदर सिंघ रामगढ़िया के पास ही थीं। भाई कान्ह सिंघ नाभा द्वारा रचित 'महान् कोश' के अनुसार, जहां आभूषण, वस्तुएं आदि रखी जाती हैं, उसे 'तोशाखाना' कहा जाता है। यहां पर इस शब्द का उपयोग श्री हरिमंदर साहिब की दर्शनी ड्योढ़ी के ऊपर बने कमरे के लिए होता है। यहां समय-समय पर श्री हरिमंदर साहिब में भेंट की गई बहुमूल्य वस्तुओं को संभालकर रखा जाता है और विशेष अवसरों पर संगत को दर्शन करवाने हेतु सुंदर 'जलोअ' सजाए जाते हैं।

जब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सरकार से मांग की कि तोशाखाना की चाबियां सरदार सुंदर सिंघ से लेकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान बाबा खड़क सिंघ को सौप दी जाएं, तब सरकार ने जिलाधिकारी (डी. सी.) श्री अमृतसर साहिब के माध्यम से लाला अमरनाथ अतिरिक्त सहायक आयुक्त को पुलिस सहित भेजकर ७ नवंबर, १९२१ ई. को ५३ चाबियों का गुच्छा अपने कब्जे में ले लिया। इससे सिक्ख पंथ में सरकार के प्रति आक्रोश और भी बढ़ गया। अब सिक्खों की सिरमौर (प्रतिनिधि) संस्था (कमेटी) ने सरकार की इस कार्यवाही के विरुद्ध बिगुल बजा दिया। इस संबंध में ज्ञानी प्रताप सिंघ

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०*

अपनी पुस्तक 'गुरुद्वारा सुधार लहर अर्थात् अकाली लहर' में लिखते हैं, ''पंजाब प्रांत की सरकार ने अपनी इस कार्रवाई को सही ठहराने के लिए एक वक्तव्य जारी किया। वक्तव्य में दर्ज था— ''शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्खों की प्रतिनिधि संस्था नहीं है। सरकार दीवानी वाद द्वारा श्री अमृतसर का प्रबंध सिक्खों के सुपुर्द कर रही थी, मगर गुरुद्वारा कमेटी ने चाबियां लेने में जल्दबाज़ी की है, इसलिए सरकार चाबियां लेने को विवश हो गई है।''

सरकार की चालाकी और सिक्ख धर्म में उसकी दखलअंदाजी को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने दीवान सजाकर तथा तकरीरों द्वारा लोगों के समक्ष उजागर करना शुरू कर दिया। इसके बाद सरकार ने कैप्टन बहादर सिंघ को श्री दरबार साहिब का सरपरस्त (प्रबंधक) नियुक्त कर दिया। इसके विरोध में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने १२ नवंबर, १९२१ ई. को एक प्रस्ताव पारित किया। यह निर्णय लिया गया कि जब तक सरकार चाबियां बाबा खड़क सिंघ को नहीं सौंपती, तब तक सिक्खों द्वारा सरकार के विरुद्ध असहयोग आंदोलन चलाया जाएगा और प्रिंस ऑफ वेल्ज़ के दौरे का भी बहिष्कार किया जाएगा। फलस्वरूप सिक्खों के इस आंदोलन से अंग्रेज सरकार घबरा गई। उसने श्री अमृतसर, लाहौर, शेखूपुरा आदि जिलों में धारा १४४ लगाकर सिक्खों के समारोहों-जलसों पर प्रतिबंध लगा दिया। घबराई हुई सरकार ने अपना पक्ष उचित ठहराने हेतु एक जलसा २६ नवंबर, १९२१ ई. को अजनाला में करने की घोषणा कर दी। इसे आयोजित भी किया गया। इस जलसे में सिक्ख समुदाय का पक्ष पेश करने हेतु अकालियों की ओर से सरदार जसवंत सिंघ झबाल, सरदार दान सिंघ विछोआ, स. तेजा सिंघ समुंदरी, पंडित दीनानाथ तथा कुछ अन्य गणमान्य व्यक्ति भेजे गए। उपायुक्त ने अपना भाषण देने के उपरांत इन सिक्ख प्रतिनिधियों को समय देने से मना कर दिया। रोष-स्वरूप अकाली प्रतिनिधियों ने अलग तौर पर अजनाला में ही जलसा आयोजित करने की घोषणा कर दी।

वहां पर दीवान अभी प्रारंभ ही हुआ था कि पुलिस ने अपनी कार्यवाही करते हुए सरदार जसवंत सिंघ झबाल, सरदार दान सिंघ विछोआ, सरदार तेजा सिंघ समुंदरी और पंडित दीनानाथ को गिरफ्तार कर लिया। इन नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार जब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास पहुंचा, तब तुरंत बाबा खड़क सिंघ, प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और सरदार महिताब सिंघ सचिव, कुछ अन्य साथियों सहित अजनाला वाले सिक्ख-जलसे में पहुंच गए। उन्होंने वहां पर ज़ोरदार ढंग से आवाज़ बुलंद करते हुए लोगों को संबोधित किया।

बौखलाई हुई सरकार ने इस धार्मिक जलसे को राजनीतिक जलसा घोषित कर दिया तथा 'जलसा निषेध' कानून के अधीन प्रधान बाबा खड़क सिंघ, सचिव सरदार महिताब सिंघ, सरदार भाग सिंघ वकील, सरदार हरी सिंघ जलंधरी, सरदार गुरचरण सिंघ, सरदार सुंदर सिंघ लायलपुरी आदि को

गिरफ्तार कर जिला श्री अमृतसर की जेल में भेज दिया। गिरफ्तार किए गए प्रतिनिधियों को सरकार ने क्षमा-याचना करने की शर्त पर रिहा करने का भरोसा दिया, किंतु किसी भी प्रमुख ने क्षमा-याचना नहीं की। अदालत ने इनमें से कई प्रमुखों को एक-एक हज़ार रुपए जुर्माना और छः-छः माह कैद की सजा सुना दी। खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर के प्राध्यापकों ने प्रस्ताव पारित कर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का समर्थन कर दिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने ६ दिसंबर, १९२१ ई. को एक बैठक आयोजित कर एक प्रस्ताव पारित किया कि जब तक सभी अकाली नेता रिहा नहीं किए जाते, तब तक कोई भी सिक्ख सरकार से श्री दरबार साहिब के तोशाखाना की चाबियां प्राप्त नहीं करेगा। यह भी मांग की गई कि चाबियां पंथ के प्रमुख बाबा खड़क सिंघ को ही दी जाएं। सिक्खों में बढ़ रहे आक्रोश को देखते हुए सरकार ने ५ जनवरी, १९२२ ई. को चाबियां सौंपने की घोषणा कर दी, परंतु कोई भी सिक्ख चाबियां लेने के लिए आगे नहीं आया, क्योंकि गिरफ्तार किए गए प्रतिनिधियों को अभी तक रिहा नहीं किया गया था।

सरकार सख्ती करने पर उतर आई। सिक्खों पर इस सख्ती का कोई असर नहीं हुआ, बल्कि उनका आंदोलन और भी प्रचंड होने लगा। सरदार सोहण सिंघ जोश अपनी पुस्तक 'अकाली मोर्चों का इतिहास' में बयान करते हैं कि ''फारसी के मुहावरे के अनुसार सरकार के पास अब न चलने के लिए जगह थी और न चलने के लिए पैर थे।''

आखिर सर जॉन एनार्ड ने पंजाब लेजिसलेटिव कौंसिल में सिक्ख प्रतिनिधियों को रिहा करने की घोषणा कर दी। गिरफ्तार किए गए १९३ सिक्खों में से १५० सिक्खों को १७ जनवरी, सन् १९२२ ई. को रिहा कर दिया गया। जब १९ जनवरी, सन् १९२२ ई. को बाबा खड़क सिंघ एवं दूसरे प्रतिनिधि रिहा होकर श्री अमृतसर पहुंचे, तब सिक्ख संगत द्वारा जयकारों की गूंज में उनका भव्य स्वागत किया गया और इसी दिन श्री अकाल तख्त साहिब के सामने एक विशाल इकट्ठ में सरकार द्वारा भेजे गए प्रतिनिधि से चाबियां बाबा खड़क सिंघ ने संगत से अनुमति लेने के बाद प्राप्त कीं। सिक्ख संगत में हर्षोल्लास की कोई सीमा न रही। अपनी विरासत, अपनी धरोहर की अच्छी तरह से देखभाल करने और इसे संभालने के प्रति सिक्ख हमेशा चेतन, सजग, जागरूक तथा तत्पर रहे हैं। इस काम के लिए उन्हें जितनी भी कुर्बानियां देनी पड़ें, वे खुशी-खुशी से आगे बढ़कर देते हैं। तभी तो सिक्खी की आन, बान और शान कायम रही है। सिक्ख पंथ चढ़दी कला तथा अकाल पुरख की रज़ा में रहता है।

चाबियों के मोर्चे की सफलता पर सिक्ख पंथ को हर तरफ से बधाइयां मिलने लगीं। महात्मा गांधी ने इस मोर्चे की सफलता-भरी विजय को भारत की आज़ादी के आंदोलन की पहली विजय बताते हुए बाबा खड़क सिंघ को एक भावपूर्ण बधाई-संदेश भेजा।

कविता

शत्-शत् नमन है मेरा, 'गुरु गोबिंद' महान को!

-डॉ. जसप्रीत कौर फ़लक*

ऐ खालसे के बानी!
ऐ सरबंस दानी!
इंसानियत की ख़ातिर
सब कुछ किया निछावर
शान तुम्हारी ऊँची
ऐ नेकियों के मालिक!
मैं गाती रहूं सदा,
तुम्हारे वीरता के गान को!
शत्-शत् नमन है मेरा,
'गुरु गोबिंद' महान को!

साहिब-ए-कमाल हो!
'गुजरी' के लाल हो!
शाहे-जलाल हो!
महका दिया है तुमने
इस गुलिस्तान को।
अमृत हमें छकाया
दसतार से सजाया
जुल्मो-सितम मिटाया
जीना हमें सिखाया।
कृपाण तब उठाई,
जब ख़तरा था जान को!
शत्-शत् नमन है मेरा,
'गुरु गोबिंद' महान को!

हक़ के लिए लड़े वो
सच बात पर अड़े वो
हर इक भ्रम को तोड़ा
बाणी के साथ जोड़ा
उनका यही है कहना
प्रभु की रज़ा में रहना
क्या-क्या दरस दिए हैं
सारे जहान को!
शत्-शत् नमन है मेरा,
'गुरु गोबिंद' महान को!

तेरी रहमतों के सदके
तेरी बरक़तों के सदके
तेरी अज़मतों के सदके
तेरी जुर्रतों के सदके
सवा लाख से लड़ाया
एक-एक जवान को!
शत्-शत् नमन है मेरा,
'गुरु गोबिंद' महान को!

*मकान सं.-११ सेक्टर-१-ए, गुरु ज्ञान विहार, डुगरी, लुधियाना, फोन : ९६४६८-६३७३३

ख़बरनामा

ऑनलाइन माध्यम से दुनिया भर के लोग बनेंगे हस्ताक्षर मुहिम का हिस्सा : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर : १ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने बंदी सिंघों की रिहाई के लिए हस्ताक्षर मुहिम का विशाल स्तर पर आगाज़ करते हुए इसे आने वाले दिनों में पूरे देश में फैलाने और ऑनलाइन गूगल फार्म के द्वारा विश्व तक ले जाने का एलान किया है। आज इस मुहिम के अंतर्गत सचखंड श्री हरिमंदर साहिब, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब और तख़्त श्री दमदमा साहिब सहित पंजाब तथा हरियाणा के लगभग २५ गुरुद्वारा साहिबान में केंद्र स्थापित कर संगत से प्रोफार्मे भरवाने का कार्य आरंभ किया गया। सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में श्री गुरु रामदास सराय के निकट स्थापित केंद्र से हस्ताक्षर मुहिम की आरंभता शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने अरदास के पश्चात् की। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य साहिबान भी मौजूद थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि बंदी सिंघों की रिहाई सिक्ख कौम का बेहद अहम मसला है, जिसके लिए लोक लहर सृजित करने के लिए हस्ताक्षर मुहिम निर्णायक साबित होगी। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बंदी सिंघों की रिहाई के लिए बीते लंबे अरसे से आवाज़ बुलंद कर रही है और इसके अंतर्गत कानूनी कार्यवाही के साथ-साथ हर स्तर पर यत्न किये गए हैं। वर्तमान समय में सरकारों द्वारा इस सम्बन्ध में अपनाया गया नकारात्मक रवैया सिक्ख कौम के साथ बड़ी बेइन्साफ़ी है। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम द्वारा देश के लिए बड़ी कुर्बानियां करने के बावजूद अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि बंदी सिंघों के मामले में सरकारों की पक्षपाती नीति स्पष्ट नज़र आ रही है और जानबूझ कर मानवाधिकारों का उल्लंघन करते हुए बंदी सिंघों को रिहा नहीं किया जा रहा।

उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा गत समय में किये प्रयत्नों की निरंतरता में यह हस्ताक्षर मुहिम आगे बढ़ाई गई है और उम्मीद है कि इससे सरकारों के बंद कान अवश्य खुलेंगे। एडवोकेट धामी ने कहा कि आज एक ही समय पर २५ गुरुद्वारा साहिबान से इसकी शुरूआत की गई है और अगले दिनों में इसे सिक्ख मिशनों के माध्यम से विभिन्न राज्यों में भी सक्रिय किया जायेगा। उन्होंने कहा कि चाहे इसे देशव्यापी मुहिम के तौर पर शुरू करने का फ़ैसला किया गया था, मगर संगत की भावनाओं के अनुसार आज के डिजिटल माध्यम के प्रयोग से इसकी पहुँच अब विश्व स्तर तक बनाई जायेगी। उन्होंने यह भी बताया कि हस्ताक्षर मुहिम के अंतर्गत भरवाए जाने वाले प्रोफार्मे हिंदी

और अंग्रेज़ी में भी छपवाए जाएंगे, ताकि पंजाब से बाहरी राज्यों के लोग हस्ताक्षर मुहिम को निकट से समझ कर इसमें शामिल हो सकें। उन्होंने कहा कि विदेशों से लोगों को इस हस्ताक्षर मुहिम के साथ जोड़ने के लिए एक विशेष ऑनलाइन गूगल फार्म तैयार कर दिया गया है, जिसे भरने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की वेबसाईट और सोशल मीडिया मंचों पर लिंक मुहैया करवाया जायेगा।

इस दौरान एडवोकेट धामी ने बंदी सिंघों की रिहाई के लिए कानूनी विशेषज्ञों की एक कमेटी का भी एलान किया। उन्होंने कहा कि विश्वव्यापी लहर सृजित करने के साथ-साथ कानूनी कार्यवाही में कोई ढील नहीं दी जायेगी। इस संबंध में वकीलों का चार सदस्यीय पैनल कार्य करेगा। इसमें सीनियर वकील एडवोकेट पूरन सिंघ हुंदल, एडवोकेट परमजीत सिंघ थिआड़ा, एडवोकेट बलदेव सिंघ ढिल्लों और एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका शामिल किये गए हैं। उन्होंने कहा कि इसमें अन्य नामवर वकीलों को भी शामिल करने के विकल्प उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने मानवाधिकारों की लड़ाई लड़ने वाले सभी दलों के साथ-साथ सिक्ख पंथ की जत्थेबंदियों और सभा-सोसायटियों तथा संगत से अपील की कि वे बंदी सिंघों की रिहाई के लिए हस्ताक्षर मुहिम का हिस्सा बनें।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य स. बावा सिंघ गुमानपुरा, स. शेर सिंघ मंडवाला, सदस्य एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, भाई राम सिंघ, स. हरजाप सिंघ सुलतानविंड, स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, स. अमरजीत सिंघ बंडाला, स. बलजीत सिंघ जलालउसमा, स. अमरीक सिंघ विछोआ, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, भाई अजाइब सिंघ अभ्यासी, शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. प्रताप सिंघ, ओएसडी स. सतबीर सिंघ धामी, अतिरिक्त सचिव स. बलविंदर सिंघ काहलवां, मैनेजर स. सतनाम सिंघ मांगासराए, स. सुखराज सिंघ, स. हरप्रीत सिंघ, इंचार्ज स. शाहबाज सिंघ, सुप्रिंटेंडेंट स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल, अतिरिक्त मैनेजर स. निशान सिंघ आदि उपस्थित थे।

हरियाणा सरकार की तरफ से गुरु-घरों में सरकारी हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर : २ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने हरियाणा सरकार की तरफ से नामज़द की गई ३८ सदस्यीय एडहॉक हरियाणा गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को मूलत: रद्द करते हुए कहा कि सिक्खों के मामलों में सरकारी साजिशें कदाचित बर्दाश्त नहीं की जाएंगी। एडवोकेट धामी ने हरियाणा सरकार की तरफ से चली गई इस साजिश की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए कहा कि सिक्ख कौम की विशेषता है कि वो अपने गुरुद्वारा साहिबान और अपनी संस्थायों का प्रबंध चलाने के लिए हमेशा खुदमुखतार रही है। सिक्खों ने सरकारी विचारधारा को कभी स्वीकार नहीं किया। इस बात का इतिहास गवाह है कि

जब भी समय की सरकारों द्वारा ऐसी साजिशें हुईं, सिक्खों ने एकजुट होकर उसका मुकाबला करते हुए पंथक विचारधारा को आगे बढ़ाया।

एडवोकेट धामी ने कहा कि यह दुख की बात है कि सिक्खों को बाँटने के लिए सरकारें साजिशें रच रही हैं और कुछ सिक्ख इनकी चालों को न समझते हुए सरकारी मोहरा बन कर विचरण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हरियाणा के गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध के लिए नामज़द की गई सरकारी कमेटी आज भी और भविष्य में भी कौम के हितों के लिए लाभप्रद साबित नहीं हो सकती। एडवोकेट धामी ने हरियाणा के सिक्खों और नेताओं से अपील की कि वे सरकार की इस साजिश को समझें। उन्होंने कहा कि हरियाणा के सिक्ख यह भी समझें कि एक तरफ़ श्री अकाल तख़्त साहिब की सरप्रस्ती और नेतृत्व तथा सिक्खों की प्रतिनिधि-संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का मसला है, जिसके लिए सिक्खों ने कुर्बानियां दीं और दूसरी तरफ़ सरकारों की सिक्ख संस्थायों को तोड़ने व अपनी मनमानी से प्रबंध चलाने की गलत मंशा है। उन्होंने हरियाणा के सिक्खों से अपील की कि इन दोनों बातों का फ़र्क समझते हुए इस मसले को मिल-बैठ कर हल करने के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब पर आएं, क्योंकि यह कभी नहीं हो सकता कि आज उन्हें अच्छी लग रही सरकारी सरप्रस्ती भविष्य में उनके साथ निभ सकेगी। उन्होंने कहा कि ऐसा ही सरकारी हस्तक्षेप शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना के समय भी अंग्रेज़ सरकार की तरफ से हुआ था, परन्तु सिक्खों ने उसे कभी स्वीकार नहीं किया था।

एडवोकेट धामी ने कहा कि यदि आज हम अपनी पंथक रिवायतों को त्याग देंगे और पंथक इतिहास को भूल कर सरकारी हस्तक्षेप को स्वीकार करेंगे तो कौम का भविष्य कभी भी सिक्खों की आशाओं के अनुकूल नहीं हो सकेगा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने एक बार फिर से अलग हरियाणा कमेटी को रद्द किया और कहा कि हरियाणा कमेटी का ढकोसला पंथ को कमज़ोर करने की चाल है, जिसे कभी भी बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।

एडवोकेट धामी ने सरकार को स्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि सरकारें ऐसी साजिशें रचती रहेंगी तो सिक्ख कौम इसका मुकाबला करने के लिए सक्रियता के साथ आगे बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि सरकारों को बड़ी कुर्बानियों के साथ अस्तित्व में आए सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट-१९२५ को स्वीकार करते हुए इस मामले में हस्तक्षेप बंद करना चाहिए। एडवोकेट धामी ने कहा कि हरियाणा कमेटी के नाम पर सरकारी साजिशों का सख़्त विरोध जारी रहेगा।

गुरुद्वारा श्री टिब्बी साहिब,
श्री मुकतसर साहिब

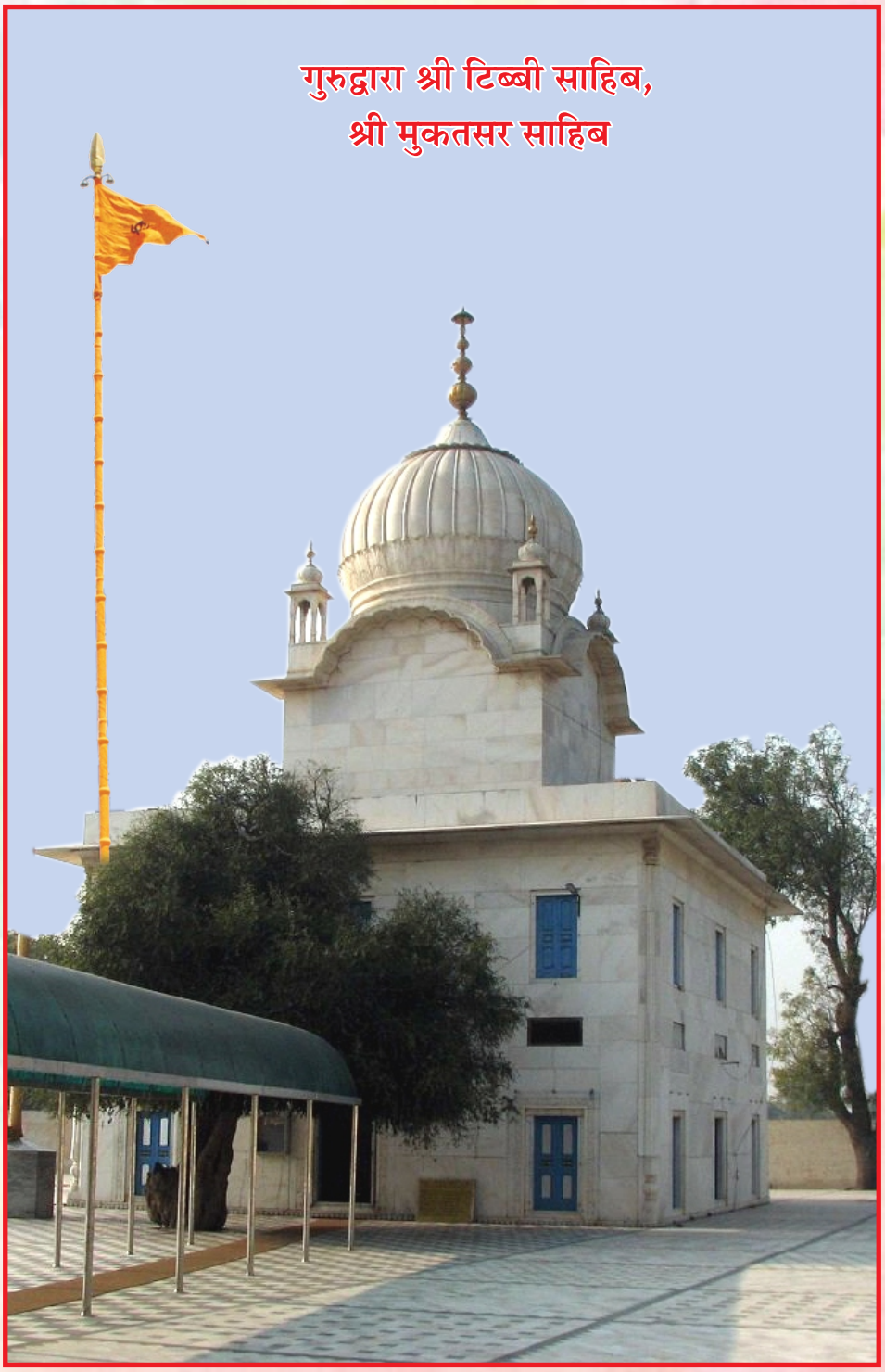

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN January 2023

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

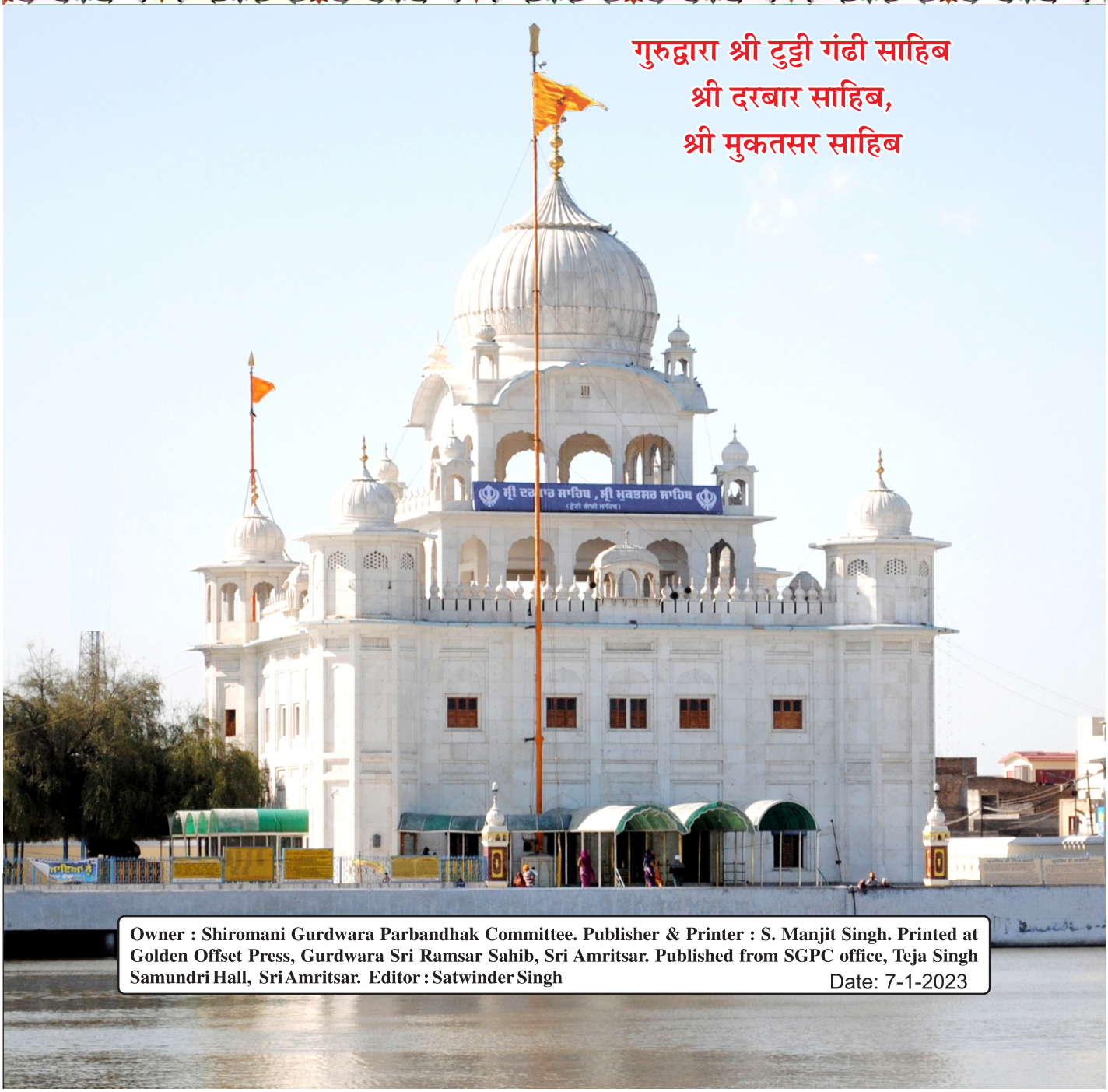

गुरुद्वारा श्री टुट्टी गंढी साहिब
श्री दरबार साहिब,
श्री मुकतसर साहिब

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh

Date: 7-1-2023